हिन्दी पुस्तक एजेन्सीमाला—२

महात्मा शेख़सादी

लेखक—
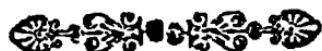
"प्रेमचन्द"

प्रकाशक:—

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
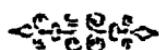
२०३, हरिसन रोड, कलकत्ता।

तीसरी बार | संवत् १९८७ | मूल्य ॥)

प्रकाशक—
बैजनाथ केडिया
प्रोप्राइटर—
हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
२०३, हरिसन रोड,
कलकत्ता।

मुद्रक—
किशोरीलाल केडिया
"वणिक् प्रेस"
१, सरकार लेन, कलकत्ता

निवेदन

शीघ्र ही हमें "महात्मा शेख़सादी" का तीसरा संस्करण निकालना पड़ा इससे पता चलता है कि पुस्तक हिन्दी प्रेमियोंको ख़ूब पसन्द आयी। यू० पी० टेक्स्टबुक कमेटीने भी इसे इनामके लिए स्वीकार कर अपनी गुण-ग्राहिकताका परिचय दिया है।

इस संस्करणमें अनेक नयी कथायें, ग़ज़लें, क़सीदे और आमोद-प्रमोदके अध्याय बढ़ा दिये गये हैं। क्रममें भी उचित परिवर्त्तन हुआ है। एक विश्वस्त चित्रसे ब्लाक बनवाकर शेख़सादीका चित्र भी पाठकोंकी भेंट किया जा रहा है। छपाई और कागज़में हर तरहसे सुन्दरताका ध्यान रखा गया है। आशा है कि यह संस्करण और अधिक पसन्द किया जायगा।

विनीत—
प्रकाशक

विषय-सूची

विषय | | पृष्ठ

परिचय

ख़ सादीकी गणना उन महात्माओंमें है जिनके विचारोंका प्रभाव केवल ईरान ही पर नहीं वरन् समस्त संसारपर पड़ा है। वह कवि थे, लेकिन ऐसे कवि जो किसी उच्च उद्देश्यको पूरा करनेके लिए जन्म लेते हैं। उन्होंने केवल काव्य-प्रेमियोंके मनोर-रञ्जनार्थ अपनी काव्य-शक्तिका उपयोग नहीं किया। उनका उद्देश्य अपने भाइयोंकी नीति, विचार तथा व्यवहारका संशोधन करना था, उन्होंने अपनी सम्पूर्ण काव्य-शक्ति इसी उद्देश्यकी भेंट कर दी। यदि संसारके किसी कविके विषयमें यह कहा जा सकता है कि ईश्वरका सन्देशा वह अपने बन्धुओंको सुनानेके लिए आया था तो वह कवि शेख़ सादी है। एक विद्वान पुरुषका कथन है कि कविका काम मानवचरित्रका अङ्कन या भावोंका दर्शाना नहीं है, उसका काम उन सचाइयोंको प्रकट करना है जिनका उसने अपने जीवनमें अनुभव किया है। इस दृष्टिसे देखिये तो सादीका स्थान बहुत ऊंचा है। मानव-स्वभावका जितना अनुभव उनको था, संसार-को जितना और जिस तरह उन्होंने देखा, उतना कदाचित् किसी

अन्य कविने न देखा हो। उन्होंने जो कुछ लिखा है वह उनका अपना अनुभव है। उस समय पृथ्वीका जो भाग सभ्य समझा जाता था वह सदैव सादीके पैरों तले रहता था वह बहुधा भ्रमण करते रहते थे और जो अनूठी तथा शिक्षाप्रद बातें देखते थे उन्हें अपने विचार-कोषमें संग्रह करते जाते थे। यही कारण है कि शेख़ सादीकी गुलिस्तां और बोस्तांका आज जितना आदर है उतना तुलसीकृत रामायणके सिवा कदाचित् किसी अन्य ग्रन्थका न होगा। जिसने कुछ थोड़ीसी भी फ़ारसी पढ़ी है वह सादीसे अवश्य परिचित है। उनकी दोनों पुस्तकें प्रत्येक पुस्तकालय, प्रत्येक विद्यालय तथा प्रत्येक विद्याप्रेमीके आदरकी सामग्री रही है। सादी केवल पद्य-रचना ही न करते थे वह गद्य-रचनामें भी अद्वितीय थे। गुलिस्तांका जितना आदर है उतना बोस्ताका नहीं है। सादीने स्वयं गुलिस्तांपर अपना गर्व प्रकट किया है। बोस्तांके टक्करकी पुस्तकें फारसीमें वर्त्तमान है। लेकिन गुलिस्तांकी समानता करनेवाली कोई पुस्तक नहीं है। अनेक बडे बड़े लेखकोंने इस ढङ्गकी पुस्तक लिखनेका प्रयत्न किया, किन्तु सफल न हुए। इसकी भाषा इतनी मधुर, लेख-शैली इतनी हृदयग्राही, और वाक्य-रचना ऐसी अनूठी है कि नीति-विषयपर ऐसे ग्रन्थ बहुत कम होंगे। ईसपकी नीति-कथायें बहुत प्रसिद्ध हैं, इसी प्रकार पंचतंत्र और हितोपदेशकी कथाओंका भी बहुत प्रचार है, पर इन पुस्तकोंमें कथा प्रायः लम्बी और पशु-पक्षी आदिके सम्बन्धमें है। सादीके पास

अनभूत घटनाओंका इतना वाहुल्य है और वह ऐसे मौकेसे उन्हें काममें लाते हैं कि उन्हें कल्पित कथाओंके गढ़नेकी आवश्यकता ही नहीं थी। वर्त्तमान समयमें अंग्रेजीके प्रसिद्ध ग्रन्थकार डाक्टर स्माइल्स, ब्लैकी, कावेट, मारडन आदिने चरित्रसुधार और नीतिपर अच्छी अच्छी पुस्तकें लिखी हैं, किन्तु विचार करके देखनेपर इनकी पुस्तकोंमें बूढ़े शेख़सादीकी लेखशैली साफ झलकती है। सादीने इस पुस्तकका नाम बहुत ही उचित रखा। यह ऐसी मनोरम वाटिका है कि आज छः शताब्दियोंके बीत जानेपर भी वैसी ही हरी-भरी, नवपुष्पित और सुसज्जित बनी हुई है। संसारमें ऐसी कदाचित् ही कोई उन्नत भाषा होगी जिसमें इसका अनुवाद न हुआ हो। अतएव ऐसे महान् लेखकसे हिन्दी प्रेमियोंका परिचय कराना आवश्यक है।

कविः करोति पद्यान्ति,
लालयत्युत्तमो जनः ।
तरुः प्रसूते पुष्पाणि,
मरुद्वहति सौरभम् ॥

महात्मा शेखसादी

वणिक् प्रेस, कलकत्ता

महात्मा शेख़सादी

जीवन-चरित्र

प्रथम अध्याय

जन्म

शेख़ मुसलहुद्दीन (उपनाम सादी) का जन्म सन् ११७२ ई० में शीराज़ नगरके पास एक गांवमें हुआ था। उनके पिताका नाम अब्दुल्लाह, और दादाका नाम शरफुद्दीन था। 'शेख़' इस घरानेकी सम्मान सूचक पदवी थी। क्योंकि उनकी वृत्ति धार्मिक शिक्षा-दीक्षा देनेकी थी। लेकिन इनका ख़ानदान सैयद था। जिस प्रकार अन्य महान् पुरुषोंके जन्मके सम्बन्धमें अनेक अलौकिक घटनायें प्रसिद्ध हैं उसी प्रकार सादीके जन्मके विषयमें भी लोगोंने कल्पनायें की हैं। लेकिन उनके उल्लेखकी ज़रूरत नहीं। सादीका जीवन हिन्दी तथा संस्कृतके अनेक कवियोंके जीवनकी भांति ही अन्धकारमय है,

उनकी जीवनीके सम्बन्धमें हमें अनुमानका सहारा लेना पड़ता है। यद्यपि उनका जीवनवृत्तान्त फ़ारसी ग्रन्थोंमें बहुत विस्तारके साथ है तथापि उनमें अनुमानकी मात्रा इतनी अधिक है, कि गोसेली भी, जिसने सादीका चरित्र अंग्रेज़ीमें लिखा है, दूध और पानीका निर्णय न कर सका। कवियोंका जीवनचरित्र हम प्रायः इसलिये पढ़ते हैं कि हम कविके मनोभावोंसे परिचित हो जायं और उसकी रचनाओंको भली भांति समझनेमें सहायता मिले। नहीं तो हमको उन जीवन-चरित्रोंसे और कोई विशेष शिक्षा नहीं मिलती। किन्तु सादीका चरित्र, आदिसे अन्त तक शिक्षापूर्ण है। इससे हमको धैर्य्य, साहस और कठिनाइयोंमें सत्पथपर टिके रहनेकी शिक्षा मिलती है।

शीराज़ इस समय फ़ारसका प्रसिद्ध स्थान है और उस जमानेमें तो वह सारे एशियाकी विद्या, गुण और कौशलकी खान था। मिश्र, एराक़, हब्श, चीन, खुरासान आदि देश देशान्तरोंके गुणीलोग वहां आश्रय पाते थे। ज्ञान, विज्ञान, दर्शन धर्मशास्त्र आदिके बड़े बड़ विद्यालय खुले हुए थे। एक समुन्नत राज्यमें साधारण समाजकी जैसी अच्छी दशा होनी चाहिए वैसी ही वहां थी। इसीसे सादीको बाल्यावस्था हीसे विद्वानोंके सत्संगका सुअवसर प्राप्त हुआ। सादीके पिता अबदुल्लाहका *"साद बिन जंगी" के दर्बारमें बड़ा मान था। नगरमें भी यह परिवार अपनी विद्या और धार्मिक जीवनके कारण बड़ी सम्मानकी दृष्टिसे देखा

* "साद बिन जंगी" उस समय ईरानका बादशाह था।

जाता था। सादी बचपन हीसे अपने पिताके साथ महात्माओं और गुणियोंसे मिलने जाया करते थे। इसका प्रभाव उनके अनुकरणशील स्वभावपर अवश्य ही पड़ा होगा। जब सादी पहली बार साद बिन ज़ंगीके दर्बारमें गये तो बादशाहने उन्हें विशेष स्नेहपूर्ण दृष्टिसे देखकर पूछा, "मियाँ लड़के, तुम्हारी उम्र क्या है?" सादीने अत्यन्त नम्रतासे उत्तर दिया, "हुज़ूरके गौरवशील राज्य-कालसे पूरे १२ साल छोटा हूं।" अल्पावस्थामें इस चतुराई और बुद्धिकी प्रखरतापर बादशाह मुग्ध हो गया अब्दुल्लाहसे कहा, बालक बड़ा होनहार है, इसके पालनपोषण तथा शिक्षाका उत्तम प्रबन्ध करना। सादी बड़े हाज़िर जवाब थे, मौक़ेकी बात उन्हें ख़ूब सूझती थी। यह उसका पहला उदाहरण है।

शेख़सादीके पिता धार्मिक वृत्तिके मनुष्य थे। अतः उन्होंने अपने पुत्रको शिक्षामें भी धर्मका समावेश अवश्य किया होगा। इस धार्मिक शिक्षाका प्रभाव सादीपर जीवनपर्य्यन्त रहा। उनके मनका झुकाव भी इसी ओर था। वह बचपन हीसे रोज़ा नमाज़ आदिके पाबन्द रहे। सादीके लिखनेसे प्रकट होता है कि उनके पिताका देहान्त उनके बाल्यकाल हीमें हो गया था। सम्भव था कि ऐसी दुरवस्थामें अनेक युवकोंकी भांति सादी भी दुर्व्यसनोंमें पड़ जाते लेकिन उनके पिताकी धार्मिक शिक्षाने उनकी रक्षाकी।

यद्यपि शीराज़में उस समय विद्वानोंकी कमी न थी और बड़े बड़े विद्यालय स्थापित थे, किन्तु वहांके बादशाह साद बिन जंगी को लड़ाई करनेकी ऐसी धुन थी कि वह बहुधा अपनी सेना लेकर

एराक़पर आक्रमण करने चला जाया करता था और राज्य-काजकी तरफ़से बेपरवा हो जाता था। उसके पीछे देशमें घोर उपद्रव मचते रहते थे और बलवान शत्रु देशमें मारकाट मचा देते थे। ऐसी कई दुर्घटनायें देखकर सादीका जी शीराज़से उचट गया। ऐसी उपद्रवकी दशामें पढ़ाई क्या होती? इसलिए सादीने युवावस्थामें ही शीराज़से बग़दादको प्रस्थान किया।

दूसरा अध्याय

शिक्षा

उस समय शीराज़से बग़दादकी यात्रा बहुत कठिन थी क़ाफ़िले चला करते थे। सादी भी एक क़ाफ़िलेके साथ हो लिये। घरपर जो माल असबाब था सब मित्रों और गरीबोंकी भेंट कर दिया। केवल एक 'क़ुरआन' जो उनके आदिगुरुने दिया था, अपने पास रख लिया इससे विदित होता है कि वह कैसे त्यागी और साहसी पुरुष थे। मार्गमें बीमार पड़ जानेके कारण क़ाफ़िले वालोंसे साथ छूट गया। लेकिन वह अकेले ही चल खड़े हुए। जिस गांवमें ठहरे थे वहांके लोगोने समझाया कि आगेका मार्ग बहुत विकट है, किन्तु सादीके पास क्या रक्खा था कि चोरोंसे डरते। थोड़ी ही दूर गये थे कि डाकुओंसे सामना हो गया। उन्होंने उनसे विनयपूर्वक कहा कि मैं गरीब विद्यार्थी हूं, विद्यो-

पार्जनके लिये बग़दाद जा रहा हूं मेरे पास शरीरपरके कपड़ों और इस कुरआनके सिवाय और कुछ नहीं है। यदि जी चाहे तो इन वस्तुओंको ले जाओ, लेकिन कृपा करके इनका दुरुपयोग मत करना ; किसी ग़रीब विद्यार्थीको दे देना। सादीके इस कथनका यह असर हुआ कि डाकू लज्जित हो गये और सदैवके लिए इस कुमार्गको छोड़नेका संकल्प कर लिया। उनमेसे दो आदमी सादीकी रक्षाके लिए साथ चले। सद्व्यवहारमें कितना प्रभाव है, यह इस घटनासे भलीभांति प्रमाणित हो जाता है। लेकिन ईश्वरको यह स्वीकार था कि इस यात्रामें सादीको ईश्वरीय न्याय और दण्डका अनुभव हो जाय। उनके दोनों साथियोंमें एकको तो सांप काट खाया। और दूसरा एक पेड़परसे गिरकर मर गया। दोनोंने बड़े कष्टसे एड़ियां रगड़ रगड़कर जान दी। उनके जीवनके इस दुष्परिणामने सादीके हृदयपर गहरा असर डाला। उन्होंने निश्चय कर लिया कि कभी किसीको कष्ट न दूंगा, यथासाध्य दूसरोंके साथ दयाका व्यवहार करूंगा।

बग़दाद उस समय तुर्क साम्राज्यकी राजधानी था। मुसलमानोंने बसरासे यूनानतक विजय प्राप्त कर ली थी और सम्पूर्ण एशियाहीमे नहीं, यूरोपमे भी उनका सा वैभवशाली और कोई राज्य नहीं था। राजा विक्रमादित्यके समयमें उज्जैनकी और मौर्य्यवंशके राज्य-कालमे पाटलिपुत्रकी जो उन्नति थी वही इस समय बग़दादकी थी। बग़दादके बादशाह ख़लीफ़ा कहलाते थे। रौनक़ और आबादीमे यह शहर शीराज़से कहीं चढ़ा बढ़ा

था। यहांके कई ख़लीफ़ा बड़े विद्याप्रेमी थे। उन्होंने सैकड़ों विद्यालय स्थापित किये थे। दूर दूरसे विद्वान् लोग पठन-पाठनके निमित्त आया करते थे। यह कहनेमें अत्युक्ति न होगी कि बग़दादका सा उन्नत नगर उस समय संसारमें नहीं था। बड़े बड़े आलिम फ़ाज़िल, मौलवी, मुल्ला, विज्ञानवेत्ता और दार्शनिकोंने जिनकी रचनायें आज भी गौरवकी दृष्टिसे देखी जाती हैं बग़दाद हीके विद्यालयोंमें शिक्षा पायी। विशेषतः "मद्रसए नज़ामिया' वर्त्तमान आक्सफ़ोर्ड या बर्लिनकी यूनिवर्सिटियोंसे किसी तरह कम न था। सात आठ सहस्र छात्र उसमें शिक्षा पाते थे। उसके अध्यापकों और अधिष्ठाताओंमे ऐसे ऐसे लोग हो गये हैं। जिनके नामपर मुसलमानोंको आज भी गर्व है। इस मद्रसेकी बुनियाद एक ऐसे विद्याप्रेमीने डाली थी जिसके शिक्षाप्रेमके सामने शायद कारनेगी भी लज्जित हो जायें। उसका नाम निजामुलमुल्कतूसी' था। 'जलालुद्दीन सलजूकी'के समयमे वह राज्यका प्रधान मन्त्री था। उसने बग़दादके अतिरिक्त बसरा, नेशापुर, इसफ़हान आदि नगरोंमें भी विद्यालय स्थापित किये थे। राज्यकोषके अतिरिक्त अपने निजके असंख्य रुपये शिक्षोन्नतिमें व्यय किया करता था। 'नजामिया' मद्रसेकी ख्याति दूर दूरतक फैली हुई थी। सादीने इसी मद्रसेमें प्रवेश किया। यह निश्चय नहीं है कि वह कितने दिनों बग़दादमें रहे। लेकिन उनके लेखोंसे मालूम होता है कि वहां * फ़िक़ह, हदीस आदिके अतिरिक्त उन्होंने विज्ञान, गणित,

* फ़िक़ह—धर्मशास्त्र।

खगोल, भूगोल, इतिहास आदि विषयोंका अच्छी तरह अध्ययन किया और "अल्लामा' की सनद प्राप्त की। इतने गहन विषयोंके पण्डित होनेके लिये सादीको १० वर्षसे कम न लगे होंगे।

कालकी गति विचित्र है। जिस समय सादीने बग़दादसे प्रस्थान किया उस समय उस नगरपर लक्ष्मी और सरस्वती दोनोंहीकी कृपा थी, लेकिन लगभग २० वर्ष बाद उन्होंने उसी समृद्ध-शाली नगरको हलाकू खांके हाथों नष्टभ्रष्ट होते देखा और अन्तिम-ख़लीफ़ा जिसके दर्बारमें बड़े बड़े राजा रईसोंकी भी मुश्किल से पहुंच होती थी, बड़े अपमान और क्रूरतासे मारा गया।

सादीके हृदयपर इस घोर विप्लवका ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने अपने लेखोंमें बारम्बार राजाओंको नीतिरक्षा, प्रजापालन तथा न्यायपरताका उपदेश दिया है। उनका विचार था और उसके यथार्थ होनेमें कोई सन्देह नहीं कि न्यायप्रिय, प्रजावत्सल राजाको कोई शत्रु पराजित नहीं कर सकता। जब इन गुणोंमे कोई अंश कम हो जाता है तभी उसे बुरे दिन देखने पड़ते हैं। सादीने दीनोंपर दया, दुखियोंसे सहानुभूति, देश भाइयोंसे प्रेम आदि गुणोंका बड़ा महत्व दर्शाया है। कोई आश्चर्य नहीं कि उनके उपदेशोंमें जो सजीवता देख पड़ती है वह इन्हीं हृदय-विदारक दृश्योंसे उत्पन्न हुई हो।

तीसरा अध्याय

देश-भ्रमण

मुसलमान यात्रियोंमें * इब्नबतूता सबसे श्रेष्ठ समझा जाता है। सादीके विषयमें विद्वानोंका स्थिर किया है कि उनकी यात्रायें 'बतूता' से कुछ ही कम थीं। उस समयके सभ्य संसारमें ऐसा कोई स्थान न था जहां सादीने पदार्पण न किया हो। वह सदैव पैदल सफ़र किया करते थे। इससे विदित हो सकता है कि उनका स्वास्थ्य कैसा अच्छा रहा होगा और वह कितने बड़े परिश्रमी थे। साधारण वस्त्रोंके सिवा वह अपने साथ और कोई सामान न रखते थे। हां, रक्षाके लिये एक कुल्हाड़ा ले लिया करते थे। आजकलके यात्रियोंकी भांति पाकेटमें नोटबुक दाबकर गाइड (पथदर्शक) के साथ प्रसिद्ध स्थानोंका देखना और घर पहुंच यात्राका वृत्तान्त छपवाकर अपनी विद्वता दर्शाना सादीका उद्देश्य न था। वह जहां जाते थे महीनों रहते थे। जन-समुदायके रीतिरिवाज, रहनसहन और आचारव्यवहारको देखते थे, विद्वानोंका सत्संग करते थे और जो विचित्र बातें देखते थे उन्हें अपने स्मरण-कोषमें संग्रह करते जाते थे। उनकी

---

* इब्नबतूता प्रख्यात यात्री था। उसका ग्रन्थ सफ़रनामा महत्वपूर्ण है।

गुलिस्तां और बोस्तां दोनों ही पुस्तकें इन्हीं अनुभवोंके फल है। लेकिन उन्होंने विचित्र जीवजन्तुओं, कोरे प्राकृतिक दृश्यों, अथवा अद्भुत वस्त्राभूषणोंके गपोड़ोंसे अपनी किताबें नहीं भरीं। उनकी दृष्टि सदैव ऐसी बातोंपर रहा करती थी जिनका कोई सदाचार सम्बन्धी परिणाम हो सकता हो, जिनसे मनोवेग और वृत्तियोंका ज्ञान हो, जिनसे मनुष्यकी सज्जनता या दुर्जनताका पता चलता हो, सदाचरण, पारस्परिक व्यवहार और नीति पालन उनके उपदेशोंके विषय थे। वह ऐसी ही घटनाओंपर विचार करते थे जिनसे इन उच्च उद्देशोंकी पूर्त्ति हो। यह आवश्यक नहीं था कि घटनायें अद्भुत ही हों। नहीं, वह साधारण बातोंसे भी ऐसे सिद्धान्त निकाल लेते थे जो साधारण बुद्धिकी पहुंचसे बाहर होते थे। निम्नलिखित दो चार उदाहरणोंसे उनकी यह सूक्ष्मदर्शिता स्पष्ट हो जायगी।

मुझे 'केश' नामी द्वीपमें एक सौदागरसे मिलनेका संयोग हुआ। उसके पास सामानसे लदे हुए १५० ऊंट, और ४० खिदमतगार थे। उसने मुझे अपना अतिथि बनाया। सारी रात अपनी राम-कहानी सुनाता रहा कि मेरा इतना माल तुर्किस्तानमें पड़ा है, इतना हिन्दुस्तानमें, इतनी भूमि अमुक स्थानपर है, इतने मकान अमुक स्थानपर, कभी कहता, मुझे मिश्र जानेका शौक़ है लेकिन वहांका जलवायु हानिकारक है। जनाब शेख़ साहिब, मेरा विचार एक और यात्रा करनेका है, अगर वह पूरी हो जाय

तो फिर एकान्त वास करने लगूं। मैंने पूछा वह कौन सी यात्रा है? तो आप बोले, पारसका गन्धक चीन देशमें ले जाना चाहता हूं, क्योंकि सुना है, वहां इसके अच्छे दाम खड़े होते है। चीनके प्याले रूम ले जाना चाहता हूं, वहांसे रूमका '* देबा' लेकर हिन्दुस्तानमे और हिन्दुस्तानका फौलाद 'हलब'में और हलबका आईना 'यमन' में और यमनकी चादरें लेकर पारस लौट जाऊंगा। फिर रुपयेसे एक दूकान कर लूगा और सफर छोड़ दूंगा, आगे ईश्वर मालिक है। उसकी यह तृष्णा देखकर मैं उकता गया और बोला:—

आपने सुना होगा कि 'ग़ोर' का एक बहुत बड़ा सौदागर जब घोड़ेसे गिरकर मरने लगा तो उसने एक ठंढी सांस लेकर कहा, तृष्णावान् मनुष्यकी इन दो आंखोंको सन्तोषही भर सकता है या क़ब्रकी मिट्टी।

कोई थका मांदा भूखका मारा बटोही एक धनवानके घर जा निकला। वहा उस समय आमोद-प्रमोदकी बातें हो रही थीं। किन्तु उस बेचारेको उनमें ज़रा भी मज़ा न आता था। अन्तमें गृहस्वामीने कहा, जनाब, कुछ आप भी कहिये। मुसाफ़िरने जवाब दिया, क्या कहूं मेरा भूखसे बुरा हाल है। स्वामीने लौंडी-से कहा, खाना ला। दस्तरख़्वान बिछाकर खाना रक्खा गया। लेकिन अभी सभी चीजें तैयार न थीं। स्वामीने कहा, कृपाकर

---

* एक प्रकारका बहुमूल्य रेशमी कपड़ा।

ज़रा ठहर जाइये अभी कोफ़ता * तैयार नहीं है। इसपर मुसा-फ़िरने यह शेर पढ़ा—

कोफ़ता दर सफ़रये मागो मुवाश,
कोफ़्ता रा नाने-तिही कोफ़तास्त।

भावार्थ—मुझे कोफताकी जरूरत नहीं है। भूखे आदमीको खाली रोटी ही कोफता है।

एकवार मैं मित्रों और वन्धुओसे .उकताकर फ़िलस्तीनके जंगलमें रहने लगा। उस समय मुसलमानों और ईसाइयोंमें लड़ाई हो रही थी। एक दिन ईसाइयोंने मुझे क़ैद कर लिया और खाई खोदनेके कामपर लगा दिया। कुछ दिन वाद वहां हलवदेशका एक धनाढ्य मनुष्य आया, वह मुझे पहचानता था। उसे मुझपर दया आयी। वह १० +दीनार देकर मुझे क़ैदसे छुड़ाकर अपने घर ले गया और कुछ दिन वाद अपनी लड़कीसे मेरा निकाह करा दिया। वह स्त्री कर्कशा थी। आदर-सत्कार तो दूर, एक दिन क्रुद्ध हो कर बोली, क्यों साहिव, तुम वही हो न जिसे मेरे पिताने १० दिनारपर ख़रीदा था। मैंने कहा, जी हां, मैं वही लाभकारी वस्तु हूं जिसे आपके पिताने १० दिनारपर ख़रीदकर आपके हाथ १०० दीनारपर वेंच दिया। यह वही मसल हुई कि एक धर्मात्मा पुरुष किसी वकरीको भेड़ियेके पंजेसे छुड़ा लाया। लेकिन रातको उस वकरीको उसने खुद ही मार डाला

---

* एक प्रकारका व्यजन।
+ एक सोनेका सिक्का जो लगभग २५) रु०के बराबर होता है।

मुझे एक वार कई फ़कीर साथ सफ़र करते हुए मिले। मैं अकेला था। उनसे कहा कि मुझे भी साथ लेते चलिये। उन्होंने स्वीकार न किया। मैंने कहा, यह रुखाई साधुओंको शोभा नहीं देती। तब उन्होंने जवाब दिया, नाराज होनेकी बात नहीं, कुछ दिन हुए एक मुसाफ़िरको इसी तरह साथ ले लिया था, एक दिन एक क़िलेके नीचे हमलोग ठहरे। उस मुसाफ़िरने आधी रातको हमारा लोटा उठाया कि लघुशंका करने जाता हूं। लेकिन खुद ग़ायब हो गया। यहांतक भी कुशल थी। लेकिन उसने क़िलेमे ज़ाकर कुछ जवाहरात चुराये और खिसक गया। प्रातः-काल क़िलेवालोने हमे पकड़ा। बहुत खोजके पीछे उस दुष्टका पता मिला, तब हमलोग क़ैदसे मुक्त हुए। इसलिये हमलोगोंने प्रण कर लिया है कि अनजान आदमीको अपने साथ न लेंगे।

दो खुरासानी फ़क़ीर साथ सफ़र कर रहे थे। उनमें एक बुड्ढा दो दिनके बाद खाना खाता था। दूसरा जवान दिनमें तीनबार भोजनपर हाथ फेरता था। संयोगसे दोनों किसी शहरमें जासूसीके भ्रममें पकड़े गये। उन्हें एक कोठरीमें बन्द करके दीवार चुनवा दी गयी दो सप्ताह बाद मालूम हुआ कि दोनों निरपराध हैं। इसलिये बादशाहने आज्ञा दी कि उन्हें छोड़ दिया जाय। कोठरीकी दीवार तोड़ी गयी, जवान मरा मिला और बूढ़ा जीवित। इसपर लोग बड़ा कौतूहल करने लगे। इतनेमें एक बुद्धिमान पुरुष उधरसे आ निकला। उसने कहा, इसमें आश्चर्य क्या है, इसके विपरीत होता तो आश्चर्यकी बात थी।

एक साल हाजियोंके क़ाफ़िलेमें फूट पड़ गयी। मैं भी साथ ही यात्रा कर रहा था। हमने ख़ूब लड़ाई की। एक ऊंटवानने हमारी यह दशा देखकर अपने साथीसे कहा, खेदकी बात है कि शतरंजके प्यादे तो जब मैदान पार कर लेते हैं तो वज़ीर बन जाते हैं, मगर हाजी प्यादे ज्यों ज्यों आगे बढ़ते हैं, पहलेसे भी ख़राब होते जाते हैं। इनसे कहो, तुम क्या हज करोगे जो यों एक दूसरे को काटे खाते हो। हाजी तो तुम्हारे ऊंट हैं जो कांटे खाते हैं और बोझ भी उठाते हैं।

रूममें एक साधु महात्माकी प्रशंसा सुनकर हम उनसे मिलने गये। उन्होंने हमारा विशेष स्वागत किया, किन्तु खाना न खिलाया। रात को वह तो अपनी माला फेरते रहे और हमें भूखसे नींद न आयी। सुबह हुई तो उन्होंने फिर वही कलका सा आगत स्वागत आरम्भ किया। इसपर हमारे एक मुंहफट मित्रने कहा, महात्मन्, अतिथिके लिए इस सत्कारसे अधिक ज़रूरत भोजन की है। भला ऐसी उपासनासे कभी उपकार हो सकता है जब कई आदमी घरमें भूखके मारे करवटें बदलते रहें।

एकबार मैंने एक मनुष्यको तेंदुएपर सवार देखा। भयसे कांपने लगा। उसने यह देखकर हंसते हुए कहा, सादी, डरता क्यों है, यह कोई आश्चर्य्यकी बात नहीं। यदि मनुष्य ईश्वरकी आज्ञासे मुंह न मोड़े तो उसकी आज्ञासे भी कोई मुंह नहीं मोड़ सकता।

सादीने भारतकी यात्रा भी की थी। कुछ विद्वानोंका अनुमान है कि यह चार बार हिन्दुस्तान आये, परन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं। हां, उनका एक बार यहां आना निर्भ्रान्त है। वह गुजरात तक आये और शायद वहींसे लौट गये। सोमनाथके विषयमें उन्होंने एक घटना लिखी है जो शायद सादीके यात्रावृत्तान्तमें सबसे अधिक कौतूहल जनक है।

जब मैं सोमनाथ पहुंचा तो देखा कि सहस्रों स्त्री-पुरुष मन्दिरके द्वारपर खड़े हैं। उनमें कितने ही मुरादें मांगने दूर दूरसे आये हैं। मुझे उनकी मूर्खतापर खेद हुआ। एक दिन मैंने कई आदमियोंके सामने मूर्तिपूजाकी निन्दा की। इसपर मन्दिरके बहुतसे पुजारी जमा हो गये, और मुझे घेर लिया। मैं डरा कि कहीं यह लोग मुझे पीटने न लगें। मैं बोला, मैंने कोई बात अश्रद्धासे नहीं कही। मैं तो खुद इस मूर्त्तिपर मोहित हूं लेकिन मैं अभी यहांके गुप्त-रहस्योंको नहीं जानता इसलिये चाहता हूं कि इस तत्वका पूर्ण-ज्ञान प्राप्त करके उपासक बनूं। पुजारियोंको मेरी यह बातें पसन्द आयीं उन्होने कहा, आज रातको तू मन्दिरमें रह। तेरे सब भ्रम मिट जायेंगे। मैं रात भर वहां रहा। प्रातःकाल जब नगरवासी वहां एकत्रित हुए तो उस मूर्तिने अपने हाथ उठाये जैसे कोई प्रार्थना कर रहा हो। यह देखतेही सब लोग जय जय पुकारने लगे। जब लोग चले गये तो पुजारीने हंस कर मुझसे कहा, क्यों अब तो कोई शंका नहीं रही ? मैं कृत्रिम-भाव बनाकर रोने लगा और लज्जा प्रकट की। पुजारियोंको मुझ पर विश्वास हो गया। मैं कुछ दिनोके लिए

उनमें मिल गया। जब मन्दिरवालोंका मुझपर विश्वास जम गया तो एक रात को अवसर पाकर मैंने मन्दिरका द्वार बन्द कर दिया और मूर्तिके सिंहासनके निकट जाकर ध्यानसे देखने लगा। वहां मुझे एक परदा दिखाई पड़ा जिसके पीछे एक पुजारी बैठा था। उसके हाथमें एक डोर थी। मुझे मालूम हो गया कि जब यह उस डोरेको खींचता है तो मूर्तिका हाथ उठ जाता है। इसीको लोग दैविक बात समझते हैं।

यद्यपि सादी मिथ्यावादी नहीं थे तथापि इस वृत्तान्तमें कई बातें ऐसी हैं जो तर्ककी कसौटीपर नहीं कसी जा सकतीं। लेकिन इतना माननेमें कोई आपत्ति न होनी चाहिए कि सादी गुजरात आये और सोमनाथमें ठहरे थे।

चौथा अध्याय

ज़ंगीकी मृत्यु हो चुकी थी और उसका बेटा अताबक अबूबक्र राजगद्दीपर था। यह न्यायप्रिय, राज्य-कार्य्य-कुशल राजा था। उसके सुशासनने देशकी बिगड़ी हुई अवस्थाको बहुत कुछ सुधार दिया था। सादी संसारको देख चुके थे। अवस्था भी वह आ पहुंची थी जब मनुष्यको एकान्तवासकी इच्छा होने लगती है, सांसारिक झगड़ोंसे मन उदासीन हो जाता है। अतएव अनुमान कहता है कि ६५ या ७० वर्षकी अवस्थामें सादी शीराज़ आये। यहां समाज और राजा दोनोंने ही उनका उचित आदर किया। लेकिन सादी अधिकतर एकान्तवास हीमें रहते थे। राज-दरबारमें बहुत कम आते जाते। समाजसे भी किनारे रहते। इसका कदाचित् एक कारण यह भी था कि अताबक अबूबक्रको मुल्लाओं और विद्वानोंसे कुछ चिढ़ थी। वह उन्हें पाखण्डी और उपद्रवी समझता था। कितने हो सर्वमान्य विद्वानोंको उसने देशसे निकाल दिया था। इसके विपरीत वह मूर्ख फ़क़ीरोंकी बहुत सेवा और सत्कार करता; जितना ही अपढ़ फ़क़ीर होता-उतना ही उसका मान अधिक करता था। सादी विद्वान् भी थे, मुल्ला भी थे, यदि वह प्रजासे मिलते जुलते तो उनका गौरव अवश्य बढ़ता और बादशाहको उनसे खटका हो जाता। इसके सिवा यदि वह राजदरबारके उपासक बन जाते तो विद्वान् लोग उनपर कटाक्ष करते। इसलिए सादीने दोनोंसे मुंह मोड़नेमें ही अपना कल्याण समझा और तटस्थ रहकर दोनोंके कृपापात्र बने रहे। उन्होंने गुलिस्तां और बोस्तांकी रचना शीराज़हीमें की, दोनों

ग्रन्थोंमें सादीने मूर्ख साधु, फ़क़ीरोंकी खूब ख़बर ली है और राजा, बादशाहोंको भी न्याय, धर्म और दयाका उपदेश किया है। अन्धविश्वासपर सैकड़ों जगह धार्मिक चोटें की हैं। इनका तात्पर्य्य यही था कि अतावक अबूवक्र सचेत हो जाय और विद्वानोंसे द्रोह करना छोड़ दे। सादीको बादशाहकी अपेक्षा युवराजसे अधिक स्नेह था। इसका नाम फ़ख़रुद्दीन था। वह बग़दादके ख़लीफ़ाके पास कुछ तुहफ़े भेंट लेकर मिलने गया था। लौटती बार मार्गहीमें उसे अपने पिताके मरनेका समाचार मिला। युवराज बड़ा पितृभक्त था। यह ख़बर सुनते ही वह शोकसे बीमार पड़ गया और रास्तेहीमें परलोक सिधार गया। इन दोनों मृत्युओंसे सादीको इतना शोक हुआ कि वह शीराज़से फिर निकल खड़े हुए और बहुत दिनोंतक देश-भ्रमण करते रहे। मालूम होता है कि कुछ कालके उपरान्त वह फिर शीराज़ आ गये थे, क्योंकि उनका देहान्त यहीं हुआ। उनकी कब्र अबतक मौजूद है, लोग उसकी पूजा, दर्शन (ज़ियारत) करने जाया करते हैं। लेकिन उनकी सन्तानोंका कुछ हाल नहीं मिलता है। सम्भवतः सादीकी मृत्यु १२८८ ई० के लगभग हुई। उस समय उनकी अवस्था ११६ वर्षकी थी। शायद ही किसी साहित्य-सेवीने इतनी बड़ी उम्र पायी हो।

सादीके प्रेमियोंमें अलाउद्दीन नामका एक बड़ा उदार व्यक्ति था। जिन दिनों युवराज फ़ख़रुद्दीनकी मृत्युके पीछे सादी बग़दाद आये तो अलाउद्दीन वहांके सुल्तान अबाक़ा ख़ांका वज़ीर था।

एक दिन मार्गमें सादीसे उसकी भेंट हो गयी। उसने बड़ा आदर सत्कार किया। उस समयसे अन्ततक वह बड़ी भक्तिसे सादीकी सेवा करता रहा। उसके दिये हुए धनसे सादी अपने ब्याहके लिए थोड़ासा लेकर शेप दीनोंको दानकर दिया करते थे। एक बार ऐसा हुआ कि अलाउद्दीनने अपने एक गुलामके हाथ सादीके पास ५०० दीनार भेजे। गुलाम जानता था कि शेख़साहब कभी किसी चीज़को गिनते तो हैं नहीं, अतएव उसने धूर्त्ततासे १५० दीनार निकाल लिये। सादीने धन्यवादमें एक कविता लिखकर भेजी, उसमें ३५० दीनारोंका ही ज़िक्र था। अलाउद्दीन बहुत लज्जित हुआ, गुलामको दण्ड दिया और अपने एक मित्रको जो शीराज़में किसी उच्च पदपर नियुक्त था लिख भेजा कि सादीको १० हज़ार दीनार दे दो। लेकिन इस पत्रके पहुंचनेसे दो दिन पहले ही उनके यह मित्र परलोक सिधार चुके थे. रुपये कौन देता? इसके बाद अलाउद्दीनने अपने एक परम-विश्वस्त मनुष्यके हाथ सादीके पास ५० हज़ार दीनार भेजे। इस धनसे सादीने एक धर्मशाला बनवा दी। मरते समयतक शेख़सादी इसी धर्मशालामें निवास करते रहे। उसीमें अब उनकी समाधि है।

पाँचवाँ अध्याय

चरित्र

सादी उन कवियोंमें हैं जिनके चरित्रका प्रतिविम्ब उनके काव्य रूपी दर्पणमें स्पष्ट दिखाई देता है। उनके उपदेश हृदयसे निकलते थे और यही कारण है कि उनमें इतनी प्रवल शक्ति भरी हुई है। सैकड़ों अन्य उपदेशकोंकी भांति वह दूसरोंको परमार्थ सिखाकर आप स्वार्थ-पर जान न देते थे। दूसरोंको न्याय, धर्म और कर्त्तव्यपालनकी शिक्षा देकर आप विलासितामें लिप्त न रहते थे। उनकी वृत्ति स्वभावतः सात्त्विक थी उनका मन कभी वासनाओंसे विचलित नहीं हुआ। अन्य कवियोंकी भांति उन्होंने किसी राज दरबारका आश्रय नहीं लिया। लोभको कभी अपने पास नहीं आने दिया। यश और ऐश्वर्य्य दोनों ही सत्कर्मके फल हैं। यश दैविक है, ऐश्वर्य्य मानुषिक। सादीने दैविक फलपर सन्तोष किया, मानुषिकके लिए हाथ नहीं फैलाया। धनकी देवी जो बलिदान चाहती है वह देनेकी सामर्थ्य सादीमें नहीं थी। वह अपनी आत्माका अल्पांश भी उसे भेंट न कर सकते थे। यही उनकी निर्भीकताका अवलम्ब है। राजाओंको उपदेश देना सांपके बिलमें उंगली डालनेके समान है। यहां एक पांव अगर फूलों-

पर रहता है तो दूसरा काँटोमें। विशेषकर सादीके समयमें तो राजनीतिका उपदेश और भी जोखिमका काम था। ईरान और बग़दाद दोनों ही देशोंमें अरबोंका पतन हो रहा था, तातारी बादशाह प्रजाको पैरों तले कुचले डालते थे। लेकिन सादीने उस कठिन समयमें भी अपनी टेक न छोड़ी। जब वह शीराज़से दूसरी बार बग़दाद गये तो वहाँ हलाकूख़ां मुग़लका बेटा अबाक़ाखां बादशाह था। हलाकूख़ांके घोर अत्याचार चंगीज़ और तैमूरकी पैशाचिक क्रूरताओंको भी लज्जित करते थे। अबाक़ाख़ां यद्यपि ऐसा अत्याचारी न था तथापि उसके भयसे प्रजा थर थर कांपती थी। उसके दो प्रधान कर्मचारी सादीके भक्त थे। एक दिन सादी बाज़ारमें घूम रहे थे कि बादशाहकी सवारी धूमधामसे उनके सामनेसे निकली। उनके दोनों कर्मचारी उनके साथ थे। उन्होंने सादीको देखा तो घोड़ोंसे उतर पड़े और उनका बड़ा सत्कार किया। बादशाहको अपने वज़ीरोंकी यह श्रद्धा देखकर बड़ा कुतूहल हुआ। उसने पूछा यह कौन आदमी है। वज़ीरोंने सादीका नाम और गुण बताया। बादशाहके हृदयमें भी सादीकी परीक्षा करनेका विचार पैदा हुआ। बोला, कुछ उपदेश मुझे भी कीजिये। संभवतः उसने सादीसे अपनी प्रशंसा करानी चाही होगी। लेकिन सादीने निर्भयतासे यह उपदेशपूर्ण शेर पढ़ेः -

शहे कि पासे रयैयत निगाह मीदारद,
हलाल बाद ख़िराजश कि मुज़्दे चौपानीस्त।
वगर न राइये ख़ल्क़स्त ज़हरमारश बाद;
कि हरचे मीख़ुरद अज़ जज़ियए मुसलमानीस्त।

भावार्थ—बादशाह जो प्रजापालनका ध्यान रखता है एक चरवाहेके समान है। यह प्रजासे जो कर लेता है वह उसकी मजदूरी है। यदि वह ऐसा नहीं करता तो हरामका धन खाता है।

अवाक़ाखा यह उपदेश सुनकर चकित हो गया। सादीकी निर्भयताने उसे भी सादीका भक्त बना दिया। उसने सादीको बड़े सम्मानके साथ विदा किया।

सादीमें आत्मगौरवकी मात्रा भी कम न थी। वह आनपर जान देनेवाले मनुष्योंमें थे। नीचतासे उन्हें घृणा थी। एक बार इस्कनदरियामें बड़ा अकाल पड़ा। लोग इधर उधर भागने लगे। वहां एक बड़ा सम्पत्तिशाली ख़ोजा था। वह ग़रीबोंको खाना खिलाता और अभ्यागतोंकी अच्छी सेवा सम्मान करता। सादी भी वहीं थे। लोगोंने कहा, आप भी उसी ख़ोजेके मेहमान बन जाइये। इसपर सादीने उत्तर दिया—

शेर कभी कुत्तेका जूठा नहीं खाता चाहे अपनी मांदमें भूखों मर भले ही जाय।

सादीको धर्मध्वजीपनसे बड़ी चिढ़ थी। वह प्रजाको मूर्ख और स्वार्थी मुल्लाओंके फन्देमें पड़ते देखकर जल जाते थे। उन्होंने काशी, मथुरा, वृन्दावन या प्रयागके पाखण्डी पण्डों-की पोपलीलायें देखी होतीं तो इस विषयमें उनकी लेखनी और भी तीव्र हो जाती। छत्रधारी, हाथीपर बैठनेवाले महन्त, पालकियोंमें चंवर डुलानेवाले पुजारी, घन्टों तिलक मुद्रामें समय ख़र्च करनेवाले पण्डित और राजा रईसोंके

दर्वारमें खिलौना बननेवाले महात्मा उनकी समालोचनाको कितनी रोचक और हृदयग्राही बना देते ? एक बार लेखकने दो जटाधारी साधुओंको रेलगाड़ीमे बैठे देखा। दोनों महात्मा एक पूरे कम्पार्टमेण्टमें बैठे हुए थ और किसीको भीतर न घुसने देते थे। मिले हुए कम्पार्टमेंटोंमे इतनी भीड़ थी कि आदमियोंको खड़े होनेकी जगह भी न मिलती थी। एक वृद्ध यात्री खड़े खड़े थककर धीरेसे साधुओंके डब्बेमे जा बैठा। फिर क्या था। साधुओंको योग शक्तिने प्रचण्ड रुप धारण किया, बुड्ढेको डाट बताई और ज्योंही स्टेशन आया, स्टेशन—मास्टरके पास जाकर फ़रियाद की कि बाबा, यह बूढ़ा यात्री साधुओंको बैठने नहीं देता। मास्टर साहबने साधुओंकी डिगरी कर दी। भस्म और जटाकी यह चमत्कारिक शक्ति देखकर सारे यात्री रोबमें आ गये और फिर किसीको उनकी उस गाड़ीको अपवित्र करनेका साहस नहीं हुआ। इसी तरह रीवांमें लेखकको मुलाक़ात एक संन्यासीसे हुई। वह स्वयं अपने गेरुवे बानेपर लज्जित थे। लेखकने कहा, आप कोई और उद्यम क्यों नहीं करते? बोले, अब उद्यम करनेकी सामर्थ्य नहीं, और करैं भी तो क्या। मेहनत-मजूरी होती नहीं, विद्या कुछ पढ़ी नहीं, यह जीवन तो इसी भांति कटेगा। हां, ईश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि दूसरे मुझे सद्बुद्धि दे और इस पाखण्डमें न फंसावे। सादीने हज़ारो घटनायें देखी होंगी, और कोई आश्चर्य नहीं

कि इन्हीं बातोंसे उनका दयालु हृदय भी पाखण्डियोंके प्रति ऐसा कठोर हो गया हो।

सादी मुसलमानी धर्मशास्त्रके पूर्ण पण्डित थे। लेकिन दर्शनमें उनकी गति बहुत कम थी। उनकी नीति शिक्षा स्वर्ग और नर्क, तथा भयपर ही अवलम्बित है। उपयोगवाद तथा परमार्थवादकी उनके यहां कोई चर्चा नहीं है। सच तो यह कि सर्वसाधारणमें नीतिका उपदेश करनेके लिए इनकी आवश्यकता ही क्या थी। वह सदाचार जिसकी नींव दर्शनके सिद्धान्तोंपर होती है धार्मिक सदाचारसे कितने ही विषयोंमें विरोध रखता है और यदि उसका पूरा पूरा पालन किया जाय तो संभव है समाजमें घोर विप्लव मच जाय।

सादीने सन्तोषपर बड़ा-ज़ोर दिया है। यह उनकी सदाचार शिक्षाका एकमात्र मूलाधार है। वह स्वयं बड़े सन्तोषी मनुष्य थे। एकबार उनके पैरों में जूते नही थे, रास्ता चलनेमे कष्ट होता था। आर्थिक दशा भी ऐसी नहीं थी कि जूता मोल लेते। चित्त बहुत खिन्न हो रहा था। इसी विकलतामे कूफ़ा की मस्जिदमें पहुंचे तो एक आदमीको मस्जिदके द्वारपर बैठे देखा जिसके पांव ही नहीं थे। उसकी दशा देखकर सादीकी आंखे खुल गयीं। मस्जिदसे चले आये और ईश्वरको धन्यवाद दिया कि उसने उन्हें पांवसे तो वञ्चित नहीं किया। ऐसी शिक्षा इस बीसवीं शताब्दिमें कुछ अनुपयुक्त सी प्रतीत होती है। यह असन्तोषका समय है। आजकल सन्तोष

और उदासीनतामें कोई अन्तर नहीं समझा जाता। समाज-की उन्नति असन्तोषकी ऋणी समझी जाती है। लेकिन सादीकी सन्तोषशिक्षा सदुद्योगकी उपेक्षा नहीं करती। उनका कथन है कि यद्यपि ईश्वर समस्त सृष्टिकी सुधि लेता है लेकिन अपनी जीविकाके लिए यत्न करना मनुष्यका परम कर्तव्य है।

यद्यपि सादीके भाषा लालित्यका हिन्दी अनुवादमें दर्शाना बहुत ही कठिन है तथापि उनकी कथाओं और वाक्यों-से उनकी शैलीका भली भांति परिचय मिलता है। निस्सं-देह वह समस्त साहित्यसंसारके एक समुज्ज्वल रत्न है, और मनुष्यसमाजके एक सच्चे पथप्रदर्शक। जबतक सरल भावोंको समझने वाले, और भाषा लालित्यका रसास्वादन करनेवाले प्राणी संसारमें रहेंगे तबतक सादी का सुयश जीवित रहेगा, और उनकी प्रतिभाका लोग आदर करेंगे।

महात्मा शेख़ सादी

रचनायें

छठवां अध्याय

रचनायें और उनका महत्व

सादीके रचित ग्रन्थोंकी संख्या १५ से अधिक है। इनमें ४ ग्रन्थ केवल ग़ज़लोंके हैं। एक दो ग्रन्थोंमें वह क़सीदे दर्ज हैं जो उन्होंने समय समयपर बादशाहों या वज़ीरोंकी प्रशंसामें लिखे थे। इनमें एक अरवी भाषामें है। दो ग्रन्थ भक्तिमार्गपर हैं। उनकी समस्त रचनामें मौलिकता और ओज विद्यमान है, कितने ही बड़े बड़े कवियोंने उन्हें ग़ज़लोंका बादशाह माना है। लेकिन सादीकी ख्याति और कीर्त्ति विशेषकर उनकी गुलिस्तां और बोस्तांपर निर्भर है। सादीने सदाचारका उपदेश करनेके लिये जन्म लिया था और उनके क़सीदों और ग़ज़लोंमें भी यही गुण प्रधान है। उन्होंने क़सीदोंमें भाटपना नहीं किया हैं, झूठी तारीफ़ोंके पुल नहीं बांधे हैं। ग़ज़लोंमें भी हिज्र और विसाल, जुल्फ़ और कमरके दुखड़े नहीं रोये हैं।

कहीं भी सदाचार को नहीं छोड़ा। गुलिस्तां और बोस्तांका तो कहना ही क्या है? इनकी तो रचनाही उपदेशके निमित्त हुई थी। इन दोनों ग्रन्थोंको फ़ारसी साहित्यका सूर्य्य और चन्द्र कहें तो अत्युक्ति न होगी। उपदेशका विषय बहुत शुष्क समझा जाता है, और उपदेशक सदासे अपनी कड़वी, और नीरस बातोंके लिये बदनाम रहते आये हैं। नसीहत किसीको अच्छी नहीं लगती। इसी लिए विद्वानोंने इस कड़वी औषधि को भांति भांतिके मीठे शर्बतोंके साथ पिलानेकी चेष्टा की है। कोई चील-कौवेकी कहानियां गढ़ता है, कोई कल्पित कथायें नमक मिर्च लगाकर बखानता है। लेकिन सादीने इस दुस्तरकार्य्यको ऐसी विलक्षण कुशलता और बुद्धिमत्तासे पूरा किया है कि उनका उपदेश काव्यसे भी अधिक सरस और सुबोध हो गया है। ऐसा चतुर उपदेशक कदाचित् ही किसी दूसरे देश में उत्पन्न हुआ हो।

सादीका सर्वोत्तम गुण वह वाक्यनिपुणता है, जो स्वाभाविक होती है और उद्योगसे प्राप्त नहीं हो सकती। वह जिस बातको लेते हैं उसे ऐसे उत्कृष्ट और भावपूर्ण शब्दोंमें वर्णन करते हैं जो अन्य किसीके ध्यानमें भी नहीं आ सकती। उनमें कटाक्ष करनेकी शक्तिके साथ साथ ऐसी मार्मिकता होती है कि पढ़नेवाले मुग्ध हो जाते हैं। उदाहरणकी भांति इस बातको कि पेट पापी है, इसके कारण मनुष्यको बड़ी कठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं, वह इस प्रकार वर्णन करते हैं:—

अगर जौरे शिकम न वूदे, हेच मुर्ग़ दर दाम न उफ़तादे, बल्कि सैयाद ख़ुद दाम न निहादे ।

भाव—यदि पेटकी चिन्ता न होती तो कोई चिड़िया जालमें न फंसती, बल्कि कोई बहेलिया जाल ही न बिछाता ।

इसी तरह इस बातको कि न्यायाधीश भी रिश्वतसे वशमें हो जाते हैं, वह यों वयान करते हैं:—

हमा कसरा दन्दां बतुर्शी कुन्द गरदद,
मगर क़ाज़ियां रा बशीरीनी ।

भाव—अन्य मनुष्योंके दांत खटाईसे गुट्ठल हो जाते हैं लेकिन न्याय-कारियोंके मिठाईसे ।

उनको यह लिखना था कि भीख मांगना जो एक निन्द्य कर्म है उसका अपराध केवल फ़क़ीरोंपर ही नहीं बल्कि अमीरों-पर भी है, इसको वह इस तरह लिखते हैं:—

"अगर शुमा रा इन्साफ़ वूदे व मारा क़नाअत,
रस्मे सवाल अज़ जहान बरख़ास्ते ।"

भाव—यदि तुममें न्याय होता और हममें सन्तोष, तो ससारमें मांगनेकी प्रथा ही उठ जाती।

इनके प्रधान ग्रन्थ गुलिस्तां और बोस्तांका दूसरा गुण उनकी सरलता है । यद्यपि इनमें एक वाक्य भी नीरस नहीं हैं, किन्तु भाषा ऐसी मधुर और सरल है कि उसपर आश्चर्य होता है । साधारण लेखक जब सजीली भाषा लिखनेकी चेष्टा करता है तो उसमें कृत्रिमता आ जाती है लेकिन सादीने सादगी और सजावट-का ऐसा मिश्रण कर दिया है कि आजतक किसी अन्य लेखक-

को उस शैलीके अनुकरण करनेका साहस न हुआ, और जिन्होंने साहस किया, उन्हें मुंहकी खानी पड़ी। जिस समय गुलिस्तांकी रचना हुई उस समय फ़ारसी भाषा अपनी बाल्यावस्थामें थी। पद्यका तो प्रचार हो गया था लेकिन गद्यका प्रचार केवल बात-चीत, हाट-बाज़ारमें था। इसलिए सादीको अपना मार्ग आप बनाना था। वह फ़ारसी गद्यके जन्मदाता थे। यह उनकी अद्भुत प्रतिभा हैं कि आज ६०० वर्षके उपरान्त भी उनकी भाषा सर्वोत्तम समझी जाती है। उनके पीछे कितनी ही पुस्तकें गद्यमें लिखी गयीं, लेकिन उनकी भाषाको पुरानी होनेका कलंक लग गया। गुलिस्तां जिसकी रचना आदिमें हुई थी आज भी फ़ारसी भाषाका शृङ्गार समझी जाती है। उसकी भाषा-पर समयका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा।

साहित्यसंसार और कविवर्गमें ऐसा बहुत कम देखनेमें आता है कि एक ही विषयपर गद्य और पद्यके दो ग्रन्थोंमें गद्य रचना अधिक श्रेष्ठ हो। किन्तु सादीने यही कर दिखाया है। गुलिस्तां और बोस्तां दोनोंमें नीतिका विषय लिया गया है। लेकिन जो आदर और प्रचार गुलिस्तांका है वह बोस्तांका नहीं। बोस्तांके जोड़की कई किताबें फ़ारसी भाषामें वर्तमान हैं। *मसनवी † सिकन्दरनामा और ‡ शाहनामा यह तीनों ग्रन्थ

* मौलाना जलालुद्दीनका महाकाव्य भक्तिके विषयमें।

† निज़ामीका काव्य, सिकन्दरबादशाहके चरित्रपर।

‡ फ़िरदोसीका अपूर्व काव्य, ईरान देशके बादशाहोंके विषयमें, फ़ारसीका महाभारत है।

उच्च कोटिके हैं और उनमें यद्यपि शब्दयोजना, काव्यसौन्दर्य्य, अलङ्कार, और वर्णनशक्ति वोस्तांसे अधिक है तथापि उसकी सरलता, और उसकी गुप्त चुटकियां और युक्तियां उनमें नहीं है। लेकिन गुलिस्तांके जोड़का कोई ग्रन्थ फ़ारसी भाषामें है ही नहीं। उसका विषय नया नहीं हैं। उसके बादसे नीतिपर फ़ारसीमें सैकड़ों ही किताबें लिखी जा चुकी हैं। उसमें जो कुछ चमत्कार है वह सादीके भाषालालित्य और वाक्यचातुरीका है। उसमें बहुत सी कथायें और घटनायें स्वयं लेखकने अनुभव की है, इसलिए उनमें ऐसी सजीवता और प्रभावोत्पादकताका संचार हो गया है जो केवल अनुभवसेही हो सकता है। सादी पहले एक बहुत साधारण कथा छेड़ते है लेकिन अन्तमें एक ऐसी चुटीली और मर्मभेदी बात कह देते है कि जिससे सारी कथा अलंकृत हो जाती है। यूरोपके समालोंचकोंने सादीकी तुलना * 'होरेस' से की है। अंग्रेज विद्वानने उन्हें एशियाके शेक्सपियरकी पदवी दी है। इससे विदित होता है कि यूरोपमें भी सादीका कितना आदर है। गुलिस्तांके लैटिन, फ्रेञ्च, जर्मन, डच, अंग्रेजी, तुर्की आदि भाषाओंमें एक नहीं कई अनुवाद हैं। भारतीय भाषाओंमें उर्दू, गुजराती, बंगलामें उसका अनुवाद हो चुका है। हिन्दी भाषामें भी महाशय मेहरचन्द दासका किया हुआ गुलिस्तांका गद्य-पद्यमय अनुवाद

---

* होरेस यूनानका सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है।

१८८८ में प्रकाशित हो चुका है। संसारमें ऐसे थोड़े ही ग्रन्थ हैं जिनका इतना आदर हुआ हो।

सातवाँ अध्याय

गुलिस्तां

यहां हम गुलिस्तांकी कुछ कथायें देते है जिनसे पाठकोंको भी सादीके लेखनकौशलका परिचय दे सकें।

गुलिस्तांमें आठ प्रकरण हैं। प्रत्येक प्रकरणमें नीति और सदाचारके भिन्न भिन्न सिद्धान्तोंका वर्णन किया गया है। प्रथम प्रकरणमें बादशाहोंका आचार, व्यवहार, और राजनीतिके उपदेश दिये गये हैं।

सादीने राजाओंके लिए निम्नलिखित बातें बहुत आवश्यक और ध्यान देने योग्य बतलाई हैं:—

प्रजापर कभी स्वयं अत्याचार न करे, न अपने कर्मचारियोंको करने दे।

किसी बातका अभिमान न करे और संसारके वैभवको नश्वर समझता रहे।

प्रजाके धनको अपने भोग-विलासमें न उड़ाकर उन्हींके आराममें खर्च करे।

गुलिस्तांकी कथायें

मैं दश्मिक़में एक औलियाकी क़ब्रपर बैठा हुआ था कि अरब देशका एक अत्याचारी बादशाह वहां पूजा करने आया। नमाज़ पढ़नेके पश्चात् वह मुझसे बोला कि मैं आजकल एक बलवान शत्रुके हाथों तंग आ गया हूं। आप मेरे लिए दुआ कीजिये। मैंने कहा कि शत्रुके पंजेसे बचनेके लिए सबसे अच्छा उपाय यह है कि अपनी दीन प्रजापर दया कीजिये।

एक अत्याचारी बादशाहने किसी साधुसे पूछा कि मेरे लिए कौन सी उपासना उत्तम है। उत्तर मिला कि तुम्हारे लिए दो पहरतक सोना सब उपासनाओंसे उत्तम है; जिसमें उतनी देर तुम किसीको सता न सको।

एक दिन ख़लीफ़ा हारूं रशीदका एक शाहज़ादा क्रोधसे भरा हुआ अपने पिताके पास आकर बोला, मुझे अमुक सिपाहीके लड़केने गाली दी है। बादशाहने मन्त्रियोंसे पूछा क्या होना चाहिए। किसीने कहा, उसे क़ैद कर दीजिये। कोई बोला, जानसे मरवा डालिये। इसपर बादशाहने शाहज़ादेसे कहा, बेटा, अच्छा तो यह है कि उसे क्षमा करो। यदि इतने उदार नहीं हो सकते हो तो उसे भी गाली दे लो।

एक साधु संसारसे विरक्त होकर वनमें रहने लगा। एक दिन राजाकी सवारी उधरसे निकली। साधुने कुछ ध्यान न

दिया। तब मन्त्रीने जाकर उससे कहा, साधुजी, राजा तुम्हारे सामनेसे निकले और तुमने उनका कुछ सम्मान न किया। साधुने कहा, भगवन्, राजासे कहिए कि नमस्कार-प्रणामकी आशा उससे रक्खें जो उनसे कुछ चाहता हो। दूसरे राजा प्रजाकी रक्षाके लिए है, न कि प्रजा राजाकी बंदगीके लिए।

—*—

एक बार न्यायशील नौशेरवां जंगलमें शिकार खेलने गया। वहां भोजन बनानेके लिए नमक की ज़रूरत हुई। नौकरको भेजा कि जाकर पासवाले गांवसे नमक ले आ। लेकिन बिना दाम दिये मत लाना। नहीं गांव ही उजड़ जायगा। नौकरने कहा, तनिक सा नमक लेनेसे गांव कैसे उजड़ जायगा? नौशेरवांने उत्तर दिया:—

अगर राजा प्रजाके बाग़से एक सेव खा ले तो नौकर लोग उस वृक्षकी जड़ तक खोद खाते हैं।

—०—

एक बादशाह बीमार था। उसे जीवनकी कोई आशा न थी। वैद्योंने जवाब दे दिया था। इन्हीं दिनों एक सवारने आकर उसे किसी क़िलेके जीतनेका सुखसंवाद सुनाया। बादशाहने लम्बी सांस लेकर कहा, यह ख़बर मेरे लिए नहीं, मेरे उत्तराधिकारियोंके लिये सुखदायक हो सकती है।

—०—

एक बादशाह किसी असाध्य रोगसे पीड़ित था। हकीमोंने बहुत कुछ यत्न किया, पर कोई असर न हुआ। अन्तमे उन्होंने

बादशाहको मनुष्यका गुर्दा सेवन करानेका विचार किया। वह मनुष्य किस रूप रंगका हो इसकी विवेचना भी कर दी। बहुत खोजनेपर एक ज़मींदारके पुत्रमें यह सब गुण पाये गये। उसके माता पिता रुपया लेकर लड़केको वध करानेपर राज़ी हो गये। क़ाज़ी साहबने भी व्यवस्था दे दी कि बादशाहकी प्राणरक्षाके लिए यह हत्या न्याय विरुद्ध नहीं है। अन्तमें जब जल्लाद उसे मारने खड़ा हुआ तो लड़का आकाशकी ओर देखकर हंस पड़ा। बादशाहने विस्मित होकर हंसीका कारण पूछा। लड़केने कहा, मैं अपने भाग्यकी विचित्रतापर हंसता हूं। माता पिताके प्रेम, क़ाज़ीके न्याय, और बादशाहके प्रजापालन, सबने मेरी रक्षासे हाथ खींच लिया, अब केवल ईश्वर ही मेरा सहायक है। बादशाहके हृदयमें दया उत्पन्न हुई, बालकको गोदमें ले लिया और बहुत सा धन देकर विदा किया।

किसी बादशाहके पास एक परोपकारी मन्त्री था। दैवयोगसे एक बार बादशाहने किसी बातपर नाराज होकर उसे जेलखाने भेज दिया। पर जेलमें भी उसके कितने ही मित्र थे जो पहलेकी भांति ही उसका मान सम्मान करते रहे। उधर एक दूसरे रईसको इस घटनाकी खबर मिली तो उसने मन्त्रीके नाम गुप्त रीतिसे पत्र लिखा कि जब वहां आपका इतना अनादर हो रहा है तो क्यों यह कष्ट झेल रहे हैं? यदि आप यहां चले आयें तो आपका यथोचित सम्मान किया जायगा और हमलोग इसे

अपना धन्यभाग समझेंगे। मन्त्रीने बहुत संक्षिप्त उत्तर लिख भेजा। इतनेमें किसीने बादशाहसे जाकर कहा, देखिये मन्त्रीजी इतनेपर भी अपनी कुटिलतासे बाज नहीं आते, अन्य देशीय रईसोंसे लिखा पढ़ी कर रहे हैं। बादशाहने गुप्तचरके पकड़े जानेका हुक्म दिया। पत्र देखा गया तो लिखा था, मैं इस आदरके लिये आपका बहुत अनुग्रहीत हूं, लेकिन जिस रियासतका वर्षोंतक नमक खा चुका हूं उससे थोड़ी सी ताडनाके कारण विमुख नहीं हो सकता। आप मुझे क्षमा करें। बादशाह यह पत्र देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और मंत्रीको कारागारसे निकालकर फिर पुराने पदपर नियुक्त कर दिया और अपनी निर्दयतापर बहुत लज्जित हुआ।

एक पहलवान अपने एक शिष्यसे विशेष प्रीति रखता था। उसने उसे एक पेंचके सिवाय अपने और सब पेंचोंका अभ्यास करा दिया। इससे शिष्यको अहङ्कार हो गया। उसने बादशाह-से जाकर कहा, मेरे गुरुजी अब केवल नामके गुरु हैं। मल्ल युद्धमें वह मेरा सामना नहीं कर सकते। बादशाहने युवकका यह घमण्ड तोड़नेका निश्चय किया। एक दंगल करानेका हुक्म दिया जिसमें गुरु और शिष्य अपना अपना पराक्रम दिखायें। सहस्रों मनुष्य एकत्र हुए। कुश्ती होने लगी। शिष्यने गुरुजीके सब पेंच काट दिये, पर अन्तिम पेंचको काट न जानता था, परास्त हो गया। बादशाहने गुरुको इनाम दिया

और युवकको वहुत धिक्कारा कि इसी वल वूते पर तू इतनी डींग मारता था। शिष्यने कहा, दीनवन्धु, गुरूजीने यह पेंच मुझसे छिपा रखा था। गुरुजीने कहा, हां, इसी दिनके लिए छिपाया था। क्योंकि चतुर मनुष्योंकी कहावत है कि मित्रको इतना सवल न वना देना चाहिये कि वह शत्रु होकर हानि पहुंचा सके।

दूसरे *प्रकरणमें*—सादीने पाखण्डी साधुओं, मौलवियों और फ़क़ीरोंको शिक्षा दी है, जिन्हें उस प्राचीन कालमें भी इसकी कुछ कम आवश्यकता न थी। सादीको पण्डितों, मौलवी—मुल्लाओंके साथ रहनेके वहुत अवसर मिले थे। अतएव वह उनके रंग-ढंगको भलीभांति जानते थे। इन उपदेशोंमें वारम्वार समझाया है कि मौलवियोंको सन्तोष रखना चाहिए। उन्हें राजा रईसोंकी खुशामद करनेकी ज़रूरत नहीं। गेरुवे वानेकी आड़में स्वार्थ सिद्धिको वह अत्यन्त घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। उनके कथनानुसार किसी वने हुए साधुसे भोगविलासमें फंसा हुआ मनुष्य अच्छा है, क्योंकि वह किसीको धोखा तो देना नहीं चाहता।

मुझे याद है कि एक वार जव मैं वाल्यावस्थामें सारी रात क़ुरआन पढ़ता रहा तो कई आदमी मेरे पास पड़े खर्राटे ले रहे थे। मैंने अपने पूज्य पितासे कहा इन सोनेवालोंको देखिये, नमाज़ पढ़ना तो दूर रहा कोई सिर भी नहीं उठाता। पिता जीने उत्तर दिया, वेटा, तू भी सो जाता तो अच्छा था क्योंकि इस छिद्रान्वेषणसे तो वच जाता।

किसी देशमें एक भिक्षुकने बहुत सा धन जमा कर रक्खा था। वहांके बादशाहने उसे बुलाकर कहा, सुना है तुम्हारे पास बड़ी सम्पत्ति है। मुझे आजकल धनकी बड़ी आवश्यकता है। यदि उसमेंसे कुछ दे दो तो कोषमें रुपये आते ही मैं तुम्हें चुका दूंगा। फ़क़ीरने कहा, जहांपनाह, मुझ जैसे भिखारीका धन आपके कामका नहीं है क्योंकि मैंने मांग मांगकर कौड़ी कौड़ी बटोरी हैं। बादशाहने कहा, इसकी कुछ चिन्ता नहीं, मैं यह रुपये काफ़िरों, अधर्मियोंको ही दूंगा। जैसा धन है वैसा ही उपयोग होगा।

एक वृद्ध पुरुषने एक युवती कन्यासे विवाह किया। जिस कमरेमें उसके साथ रहता उसे फूलोंसे खूब सजाता। उसके साथ एकान्तमें बैठा हुआ उसकी सुन्दरताका आनंद उठाया करता। रातभर जाग जागकर मनोहर कहानियां कहा करता कि कदाचित् उसके हृदयमें कुछ प्रेम उत्पन्न हो जाय। एक दिन उससे बोला, तेरा नसीब अच्छा था कि तेरा विवाह मेरे जैसे बूढ़ेसे हुआ जिसने बहुत ज़माना देखा है, सुख-दुःखका बहुत अनुभव कर चुका है। जो मित्रधर्मका पालन करना जानता है; जो मृदुभाषी, प्रसन्नचित्त और शीलवान है। तू किसी अभिमानी युवकके पाले पड़ी होती, जो रात दिन सैर सपाटे किया करता, अपने ही बनाव सिंगारमें भूला रहता, नित्य नये प्रेमकी खोजमें रहता, तो तुझसे रोते भी न बनता। युवक

लोग सुन्दर और रसिक होते हैं किन्तु प्रीतिपालन करना नहीं जानते। बूढ़ेने समझा कि इस भाषणने कामिनीको मोहित कर लिया, लेकिन अकस्मात युवतीने एक गहरी सांस ली और बोली आपने बहुत ही अच्छी बातें कही, लेकिन उनमेंसे एक भी इतनी नहीं जंचती जितना मेरे दाईका यह वाक्य कि युवतीको तीरका घाव उतना दुःखदायी नहीं होता जितना वृद्ध मनुष्यका सहवास।

मैं दयारेबक्रमें एक वृद्ध धनवान मनुष्यका अतिथि था। उसके एक रूपवान पुत्र था। एक दिन उसने कहा, इस लड़केके सिवा मेरे और कोई सन्तान नहीं हुई। यहांसे पास ही एक पवित्र वृक्ष है, लोग वहां जाकर मन्नतें मानते हैं। कितने दिनों तक रात रातभर मैंने उस वृक्षके नीचे ईश्वरसे विनती की, तब मुझे यह पुत्र प्राप्त हुआ। उधर लड़का धीरे धीरे मित्रोंसे कह रहा था, यदि मुझे उस वृक्षका पता होता तो जाकर ईश्वरसे पिताकी मृत्युके लिए विनय करता।

मेरे मित्रोंमें एक युवक बड़ा प्रसन्नचित्त, हंसमुख और रसिक था। शोक उसके हृदयमें घुसने भी न पाता था। बहुत दिनोंके बाद जब भेंट हुई तो देखा कि उसके घरमें स्त्री और बच्चे हैं। साथ ही न वह पहलेकी सी मनोरञ्जकता है न उत्साह। पूछा; क्या हाल है? बोला, जब बच्चोंका बाप हो गया तो

बच्चोंका खिलाड़ीपन कहांसे लाऊं ? अवस्थानुकूल ही सब बातें शोभा देती हैं।

किसी बादशाहने एक ईश्वर-भक्तसे पूछा कि कभी आप मुझे भी तो याद करते होंगे। भक्तने कहा, हाँ, जब ईश्वरको भूल जाता हूं तो आप याद आ जाते हैं।

एक बादशाहने किसी विपत्तिके अवसरपर निश्चय किया कि यदि यह विपत्ति टल जाय तो इतना धन साधु सन्तोंको दान कर दूंगा। जब उसकी कामना पूरी हो गयी तो उसने अपने नौकरको रुपयोंकी एक थैली साधुओंको बांटनेके लिए दी। वह नौकर चतुर था। संध्याको वह थैली ज्योंकी त्यों दर्बारमें वापस लाया, बोला दीनबन्धु, मैंने बहुत खोज की किन्तु इन रुपयोंका लेनेवाला कोई न मिला। बादशाहने कहा, तुम भी विचित्र आदमी हो, इसी शहरमें चार सौसे अधिक साधु होंगे। नौकरने विनय की, भगवन्, जो सन्त हैं वह तो द्रव्यको छूते नहीं और जो मायासक्त हैं उन्हें मैंने दिया नहीं।

किसी महात्मासे पूछा गया कि दान ग्रहण करना आप उचित समझते हैं वा अनुचित ? उन्होंने उत्तर दिया, उससे किसी सुकार्यकी पूर्त्ति हो तब तो उचित है और केवल संग्रह और व्यापारके निमित्त अत्यन्त अनुचित है।

एक साधु किसी राजा का अतिथि हुआ था। जब भोजनका समय आया तो उसने बहुत अल्प भोजन किया। लेकिन जब नमाज़का वक्त आया तो उसने खूब लंबी नमाज़ पढ़ी। जिसमें राजाके मनमें श्रद्धा उत्पन्न हो। वहांसे विदा होकर घरपर आये तो भूखके मारे बुरा हाल था। आतेही भोजन मांगा। पुत्रने कहा, पिताजी क्या राजाने भोजन नहीं दिया। बोले, भोजन तो दिया किन्तु मैंने स्वयं जान बूझकर कुछ नहीं खाया जिसमे बादशाहको मेरे योगसाधनपर पूरा विश्वास हो जाय। बेटेने कहा, तो भोजन करके नमाज़ भी फिरसे पढ़िये। जिस तरह वहांका भोजन आपका पेट नहीं भर सका, वैसे ही वहांकी नमाज़ भी सिद्ध नहीं हुई।

तीसरे प्रकरणमें—सन्तोषकी महिमा वर्णन की गयी है। सादीकी नीतिशिक्षामें सन्तोषका पद बहुत ऊंचा है। और यथार्थ भी यही है। सन्तोष सदाचारका मूलमन्त्र है। सन्तोषरूपी नौकापर बैठकर हम इस भवसागरको निर्विघ्न पार कर सकते हैं।

—०—

मिश्र देशमें एक धनवान मनुष्यके दो पुत्र थे। एकने विद्या पढ़ी, दूसरेने धन संचय किया। एक पण्डित हुआ, और दूसरा मिश्रका प्रधान मन्त्री कोषाध्यक्ष। इसने अपने विद्वान भ्रातासे कहा, देखो मैं राजपदपर पहुंचा और तुम ज्योंके त्यों रह गये। उसने उत्तर दिया ईश्वरने मुझपर विशेष कृपा की है, क्योंकि

मुझको विद्या दी जो देव दुर्लभ पदार्थ है और तुमको मिश्रकी उस गद्दीका मन्त्री बनाया जो * फिरऊनकी थी।

—o—

ईरानके बादशाह बहमनके संबन्धमें कहा जाता है कि उसने अरबके एक हकीमसे पूछा कि नित्य कितना भोजन करना चाहिये। हकीमने उत्तर दिया, २६ तोले। बादशाह बोला, भला, इतनेसे क्या होगा। उत्तर मिला, इतने आहारसे तुम ज़िन्दा रह सकते हो। इसके उपरान्त जो कुछ खाते हो वह बोझ है जो तुम व्यर्थ अपने ऊपर लादते हो।

—o—

एक मनुष्यपर किसी बनियेके कुछ रुपये चढ़ गये थे। वह उससे प्रतिदिन मांगा करता और कड़ी कड़ी बातें कहता। बेचारा सुन सुनकर दुःखी होता था, सहनेके सिवा कोई दूसरा उपाय न था। एक चतुरने यह कौतुक देख कर कहा इच्छाओंका टालना इतना कठिन नहीं है जितना बनियोंका। कसाइयोंके तक़ाजे सहनेकी अपेक्षा मांसकी अभिलाषामें मर जाना कहीं अच्छा है।

—o—

एक फ़कीरको कोई काम आ पड़ा। लोगोंने कहा अमुक पुरुष बड़ा दयालु है। यदि उससे जा कर अपनी आवश्यकता कहो तो वह तुम्हें कदापि निराश न करेगा। फ़कीर पूछते

* मिश्रका एक अभिमानी बादशाह था जिसे मूसा नबीने नील नदी में डुबा दिया।

पूछते उस पुरुषके घर पहुंचा। देखा तो वह रोनी सूरत बनाये, क्रोधमें भरा बैठा है। उलटे पांव लौट आया। लोगोंने पूछा क्यों भाई क्या हुआ? बोले सूरत ही देखकर मन भर गया। यदि मांगना ही पड़े तो किसी प्रसन्न चित्त आदमीसे मांगो, मनहूस आदमीसे न मांगना ही अच्छा है।

लोगोंने * हातिमताईसे पूछा, क्या तुमने संसारमें कोई अपनेसे अधिक योग्य मनुष्य देखा वा सुना है? बोला, हां, एक दिन मैंने लोगोंकी बड़ी भारी दावत की। संयोगसे उस दिन किसी कार्य्यवश मुझे जंगलकी तरफ जाना पड़ा। एक लकड़हारेको देखा बोझ लिये आ रहा है। उससे पूछा भाई हातिमके महमान क्यों नहीं बन जाते? आज देश भरके आदमी उसके अतिथि है। बोला, जो अपनी मेहनतकी रोटी खाता है वह हातिमके सामने हाथ क्यों फैलावे?

एक बार युवावस्थामे मैंने अपनी मातासे कुछ कठोर बातें कह दीं। माता दुःखी होकर एक कोनेमें जा बैठी और रो कर कहने लगी, बचपन भूल गया, इसी लिये अब मुंहसे ऐसी बातें निकलती हैं।

---

* उदारतामें अरबका हरिश्चन्द्र।

एक बूढ़ेसे लोगोंने पूछा विवाह क्यो नहीं करते? वह बोला वृद्धा स्त्रियोंसे मैं विवाह नहीं करना चाहता। लोगोंने कहा, तो किसी युवतीसे कर लो। बोला, जब मैं बूढ़ा होकर बूढ़ी स्त्रियोंसे भागता हूं तो युवती होकर बूढ़े मनुष्यको कैसे चाहेंगी?

चौथा प्रकरण बहुत छोटा है और उसमें मितभाषीहोनेका जो उपदेश किया गया है उसकी सभी बातोंसे आजकलके शिक्षित सहमत न होंगे, जिनका सिद्धान्त ही है कि अपनी राईभर बुद्धिको पवत बनाकर दिखाया जाय। आजकल विनय अयोग्यताकी द्योतक समझी जाती है और वही मनुष्य चलते-पुर्जे और कार्य्यकुशल समझे जाते हैं जो अपनी बुद्धि और चतुराईकी महिमा गान करनेमें कभी नहीं चूकते। किसी युरोपीय सज्जनने यह लिखनेमें भी सकोच नहीं किया कि चुप रहनेसे मूर्खता प्रगट होती है। लेकिन इसमें किसीको शंका नहीं हो सकती कि मितभाषी होना भी समाजकी उन्नतिके लिए उपयोगी है। ऐसे अवसर भी आ जाते हैं जब हमको अपनी वाचालतापर पछताना पड़ता है। इस विषयमें सादीने कई मर्मपूर्ण उपदेश दिये हैं। जिनपर चलनेसे हमको विशेष लाभ हो सकता है।

एक चतुर युवकका नियम था कि बुद्धिमानोंकी सभामें बैठता तो मौन धारण कर लेता। लोगोंने उससे कहा, तुम भी कभी कभी किसी विषयपर कुछ बोला करो। उसने कहा, कहीं ऐसा न हो कि लोग मुझसे ऐसी बात पूछ बैठें जो मुझे ही न हो और मुझे लज्जित होना पड़े।

एक विद्वानने कहा है कि यदि संसारमें कोई ऐसा है जो अपनी मूर्खताको स्वीकार करता हो तो वही मनुष्य है जो किसी आदमीकी वात समाप्त होनेसे पहले ही बोल उठता है।

हसन नामके एक मंत्रीपर वादशाह महमूद ग़ज़नीका बड़ा विश्वास था। एक दिन उससे अन्य कर्मचारियोंने पूछा कि आज वादशाहने अमुक विषयके सम्बन्धमें तुमसे क्या कहा? हसनने कहा जो तुमसे कहा, वही हमसे भी कहा। बोले, जो बातें तुमसे होती हैं वह हमसे नहीं कहते। उत्तर दिया, जब वादशाह मुझपर विश्वास करके कोई भेदकी बातें कहते हैं तो मुझसे क्यो पूछते हो।

किसी मस्जिदमें एक अवैतनिक मौलवी ऐसी बुरी तरह नमाज़ पढ़ता कि सुननेवालोंको घृणा होती। मस्जिदका स्वामी दयालु था। वह मौलवीका दिल दुखाना नहीं चाहता था। मौलवीसे कहा कि इस मस्जिदके कई पुराने मुल्ला है जिन्हें मैं ५) मासिक देता हूं। तुम्हें १०) दूंगा, लेकिन किसी दूसरी मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ आया करो। मौलवीने इसे स्वीकार कर लिया। लेकिन थोड़े ही दिनोंमें वह फिर स्वामी-के पास आया और बोला, आपने तो मुझे १०) देकर यहांसे निकाला, अब जहां हूं वहांके लोग मुझे मस्जिदसे जानेके लिये

२०) दे रहे हैं। स्वामी खूब हंसा और बोला, पचास दीनार लिये बिना पिण्ड मत छोड़ना।

पांचवां और छठवां प्रकरण जीवनकी ही मुख्य अवस्थाओंसे सम्बन्ध रखते हैं। एकमें युवावस्था, दूसरेमें वृद्धावस्थाका वर्णन है। युवावस्थामें हमारी मनोवृत्तियां कैसी होती हैं, हमारे कर्त्तव्य क्या होते हैं, हम वासनाओंमें किस प्रकार लिप्त हो जाते हैं, बुढ़ापेमें हमें क्या क्या अनुभव होते हैं, मनमें क्या अभिलाषायें रहती हैं, हमारा क्या कर्त्तव्य होना चाहिए। इन सब विषयोंको सादीने इस तरह वर्णन किया है मानो वह भी सदाचारके अङ्ग हैं। इसमें कितनी ही कथायें ऐसी हैं जिनसे मनोरंजनके सिवा कोई नतीजा नहीं निकलता, वरन् कुछ कथायें ऐसी भी हैं जिनको गुलिस्तां जैसे ग्रन्थमें स्थान न मिलना चाहिए था। विशेषकर युवावस्थाका वर्णन करते हुए तो ऐसा मालूम होता है मानो सादीको जवानीका नशा चढ़ गया था।
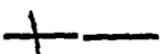
सातवां प्रकरण शिक्षासे सम्बन्ध रखता है। सादीने शिक्षकोंको दोष और गुण, शिष्य और गुरुके पारस्परिक व्यवहार और शिक्षाके फल और विफलका वर्णन किया है। उनका सिद्धान्त था कि शिक्षा चाहे कितनी ही उत्तम हो मानव स्वभावको नहीं बदल सकती और शिक्षक चाहे कितना ही विद्वान् और सच्चरित्र क्यों न हो कठोरताके बिना अपने कार्यमें सफल नहीं हो सकता। यद्यपि आजकल यह सिद्धान्त निर्भ्रान्त नहीं माने जा सकते तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि उनमें कुछ भी तत्त्व नहीं है। कोई शिक्षा पद्धति अबतक ऐसी नहीं निकलती है जो दण्डका निषेध करती हो, हां कोई शारीरिक दण्डके पक्षमें है, कोई मानसिक।

एक विद्वान किसी बादशाहके लड़केको पढ़ाता था। वह उसे बहुत मारता और डांटता था। राजपुत्रने एक दिन अपने पितासे जाकर अध्यापककी शिकायत की। बादशाहको भी क्रोध आया। अध्यापकको बुलाकर पूछा, आप मेरे लड़केको इतना क्यों मारते हैं? इतनी निर्दयता आप अन्य लड़कोंके साथ नहीं करते? अध्यापकने उत्तर दिया, महाराज, राजपुत्रमें नम्रता और सदाचारकी विशेष आवश्यकता है क्योंकि बादशाह लोग जो कुछ कहते या करते है वह प्रत्येक मनुष्यकी जिह्वापर रहता है पर जिसे बचपनमें सच्चरित्रताकी शिक्षा कठोरतापूर्वक नहीं मिलती उसमें बड़े होनेपर कोई अच्छा गुण नहीं आ सकता। हरी लकड़ीको चाहे जितना झुकालो लेकिन सूख जानेपर वह नहीं मुड़ सकती।

मैंने अफ्रीका देशमें एक मौलवीको देखा। वह अत्यन्त कुरूप, कठोर और कटुभाषी था। लड़कोंको पढ़ाता कम और मारता ज़ियादा। लोगोंने उसे निकालकर एक धार्मिक, नम्र और सहनशील मौलवी रक्खा। यह हज़रत लड़कोंसे बहुत प्रेमसे बोलते और कभी उनकी तरफ़ कड़ी आंखसे भी न देखते। लड़के उनका यह स्वभाव देखकर ढीठ हो गये। आपसमें लड़ाई दंगा मचाते और लिखनेकी तख़्तियां लड़ाया करते। जब मैं दूसरी बार फिर वहां गया तो मैंने देखा कि वही पहलेवाला मौलवी बालकोंको पढ़ा रहा है। पूछनेपर विदित हुआ कि दूसरे

मौलवीको नम्रतासे उकता जानेपर लोग पहले मौलवीको मनाकर लाये थे।

एक बार मैं बलख़से कुछ यात्रियोंके साथ आ रहा था। हमारे साथ एक बहुत बलवान नवयुवक था जो डींग मारता चला आता था कि मैंने यह किया और वह किया। निदान हमको कई डाकुओंने घेर लिया। मैंने पहलवानसे कहा, अब क्या खड़े हो, कुछ अपना पराक्रम दिखाओ। लेकिन लुटेरोंको देखते ही उस मनुष्यके होश उड़ गये। मुख फीका पड़ गया। तीर कमान हाथसे छूटकर गिर पड़ा और वह थरथर कांपने लगा। जब उसकी यह दशा देखी तो अपना असबाब वहीं छोड़कर हमलोग भाग खड़े हुए। यों किसी तरह प्राण बचे। जिसे युद्धका अनुभव हो वही समरमें अड़ सकता है। इसके लिये बलसे अधिक साहसकी ज़रूरत है।

आठवें प्रकरण में सादीने सदाचार और सद्व्यवहारके नियम लिखे हैं। कथाओंका आश्रय न लेकर खुले खुले उपदेश किये हैं। इसलिए सामान्य रीतिसे यह प्रकरण विशेष रोचक न हो सकता था, किन्तु इस कमीको सादीने रचना सौन्दर्य्यसे पूरा किया है। छोटे छोटे वाक्योंमें सूत्रोंकी भांति अर्थ भरा हुआ है। मानो यह प्रकरण सादीके उपदेशोंका निचोड़ है। यह वह उपवन है जिसमें राजनीति, सदाचार, मनोविज्ञान, समाजनीति, सभाचातुरी आदि रंग-बिरंगे पुष्प लहलहा रहे हैं। इन

फूलोंमें छिपे हुए काँटे भी हैं, जिनमें वह अद्भुत गुण है कि वह वहीं चुभते हैं जहां चुभने चाहिये।

यदि कोई निर्बल शत्रु तुम्हारे साथ मित्रता करे तो तुमको उससे अधिक सचेत रहना चाहिए। जब मित्रकी सच्चाईका ही भरोसा नहीं तो शत्रुओंकी खुशामदका क्या विश्वास!

यदि किन्हीं दो दुश्मनोंके बीचमें कोई बात कहनी हो तो इस भांति कहो कि अगर वे फिर मित्र हो जायं तो तुम्हें लज्जित न होना पड़े।

जो मनुष्य अपने मित्रके शत्रुओंसे मित्रता करता है वह अपने मित्रका शत्रु है।

जबतक धनसे काम निकले तबतक जानको जोखिममें न डालो। जब कोई उपाय न रहे तो म्यानसे तलवार खींचो।

शत्रुकी सलाहके विरुद्ध काम करना ही बुद्धिमानी है। अगर वह तुम्हें तीरके समान सीधी राह दिखावे तो भी उसे छोड़ दो और उलटी (उसके विरुद्ध) राह जाओ।

न तो इतने कठोर बनो कि लोग तुम से डरने लगें और न इतने कोमल कि लोग सिर चढ़ें।

दो मनुष्य राज्य और धर्मके शत्रु हैं, निर्दयी राजा और मूर्ख साधु।

राजाको उचित है कि अपने शत्रुओंपर इतना क्रोध न करे कि जिससे मित्रोंके मनमें भी खटका हो जाय।

जब शत्रुकी कोई चाल काम नहीं करती तब वह मित्रता पैदा करता है; मित्रताकी आड़में वह उन सब कामोंको कर सकता है जो दुश्मन रहकर न कर सकता।

सांपके सिरको अपने बैरीके हाथसे कुचलवाओ। या तो सांप ही मरेगा या दुश्मन हीसे गला छूटेगा।

जब तक तुम्हें पूर्ण विश्वास न हो कि तुम्हारी बात पसन्द आवेगी तबतक बादशाहके सामने किसीकी निन्दा मत करो; अन्यथा तुम्हें स्वयं हानि उठानी पड़ेगी।

जो व्यक्ति किसी घमण्डी आदमीको उपदेश करता है, वह खुद नसीहतका मुहताज है।

जो मनुष्य सामर्थ्यवान् होकर भी भलाई नहीं करता उसे सामर्थ्यहीन होनेपर दुःख भोगना पड़ेगा। अत्याचारीका विपद्में कोई साथी नहीं होता।

—०—

किसीके छिपे हुए ऐब मत खोलो; इससे तुम्हारा भी विश्वास उठ जायगा।

—०—

विद्या पढ़कर उसका अनुशीलन न करना जमीन जोतकर बीज न डालनेके समान है।

—०—

जिसकी भुजाओंमें बल नहीं है, यदि वह लोहेकी कलाई वालेसे पंजा ले तो यह उसकी मूर्खता है।

—०—

दुर्जन लोग सज्जनोंको उसी तरह नहीं देख सकते जिस तरह बाज़ारी कुत्ते शिकारी कुत्तोंको देखकर दूरसे गुर्राते हैं, लेकिन पास जानेकी हिम्मत नहीं करते।

—०—

गुणहीन गुणवानोंसे द्वेष करते हैं।

—०—

बुद्धिमान लोग पहला भोजन पच जानेपर फिर खाते हैं, योगी लोग उतना खाते हैं जितनेसे जीवित रहें, जवान लोग पेटभर खाते हैं, बूढ़े जबतक पसीना न आ जाय खाते ही रहते हैं, किन्तु कलन्दर इतना खा जाते हैं कि सांसकी भी जगह नहीं रहती।

—०—

अगर पत्थर हाथमें हो और सांप नीचे तो उस समय सोच विचार नहीं करना चाहिये।

—०—

अगर कोई बुद्धिमान मूर्खोंके साथ वादविवाद करे तो उसे प्रतिष्ठाकी आशा न रखनी चाहिये।

—०—

जिस मित्रको तुमने बहुत दिनोंमें पाया है उससे मित्रता निभानेका यत्न करो।

—०—

विवेक इन्द्रियोंके अधीन है जैसे कोई सीधा मनुष्य किसी चंचल स्त्रीके अधीन हो।

—०—

बुद्धि, बिना बलके छल और कपट है, बल बिना बुद्धिके मूर्खता और क्रूरता है।

—०—

जो व्यक्ति लोगोंका प्रशंसापात्र बननेकी इच्छासे वासनाओंका त्याग करता है, वह हलालको छोड़कर हरामकी ओर झुकता है।

—०—

दो बातें असम्भव हैं, एक तो अपने अंशसे अधिक खाना, दूसरे मृत्युसे पहले मरना।

—०—

आठवां अध्याय

बोस्तां

फ़ारसी साहित्यकी पाठ्य पुस्तकोंमें गुलिस्तांके बाद बोस्तांका ही प्रचार है। यह कहनेमें कुछ अत्युक्ति न होगी कि काव्यग्रन्थोंमें बोस्तांका वही आदर है जो गद्यमें गुलिस्तांका है। निज़ामीका सिकन्दरनामा, फिरदौसीका शाहनामा, मौलाना रूमकी मसनवी, और दीवान हाफ़िज़ यह चारों ग्रन्थ बोस्ताकेही समान गिने जाते हैं। निज़ामी और फ़िरदौसी वीर-रसमें अद्वितीय हैं, मौलाना रूमकी मसनवी भक्ति सम्बन्धी ग्रन्थोंमें अपना जवाब नहीं रखती और हाफ़िज़ प्रेम-रसके राजा हैं। इन चारों काव्योंका आदर किसी न किसी अंशमें उनके विषयपर निर्भर है। लेकिन बोस्तां एक नीतिग्रन्थ है और नीतिके ग्रन्थ बहुधा जनताको प्रिय नहीं हुआ करते। अतएव बोस्तांका जो आदर और प्रचार है वह सर्वथा उसकी सरलता और विचारोत्कर्षतापर निर्भर है। मौलाना रूमने जीवनके गूढ़ तत्वोंका वर्णन किया है और धार्मिक विचारके मनुष्योंमें उसका बड़ा मान है। भाषाकी मधुरता, और प्रेमके भावमें

हाफ़िज़ सादीसे बहुत बढ़े हुए हैं। उनकी सी मर्मस्पर्शिनी कविता फ़ारसीमें और किसीने नहीं की। उनकी ग़ज़लोंके कितने ही शेर जीवनकी साधारण बातोंपर ऐसे घटते हैं मानो उसी अवसरके लिये लिखे गये हों। धन्य है शीराज़की वह पवित्र भूमि जिसने सादी और हाफ़िज़ जैसे दो ऐसे अमूल्य रत्न उत्पन्न किये। भाषा और भावकी सरलतामें सादी सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। फ़िरदौसी और निज़ामी बहुधा अलौकिक बातोंका वर्णन करते हैं। पर सादीने कहीं अलौकिक घटनाओंका सहारा नहीं लिया है। यहांतक कि उनकी अत्युक्तियां भी अस्वाभाविक नहीं होतीं। उन्होंने समयानुसार सभी रसोंका वर्णन किया है लेकिन करुणा-रस उनमें सर्वप्रधान है। दयाके वर्णनमें उनकी लेखनी बहुत ही करुण हो गयी है। सादी नमाज़ और रोज़ेके पाबन्द तो थे किन्तु सेवाधर्मको उससे भी श्रेष्ठ समझते थे। उन्होने बारम्बार सेवापर ज़ोर दिया है। उनका दूसरा प्रिय विषय राजनीति है। बादशाहोंको न्याय, धर्म, दीनपालन और क्षमाका उपदेश करनेमें वह कभी नही थकते। उनकी राजनीति पर लायलटी (राजभक्ति) का ऐसा रंग नहीं चढ़ा था कि वह खरी खरी बातोंके कहनेसे चूक जायं। उनके राजनीति विषयक विचारोंकी स्वतन्त्रतापर आज भी आश्चर्य होता है। इस बीसवी शताब्दिमें भी हमारे यहां बेगारकी प्रथा क़ायम है। लेकिन आजके कई सौ वर्ष पहले अपने ग्रन्थोंमें सादीने कई जगह इसका किया है।

बोस्तांमें १० अध्याय हैं उनकी विषय सूची देखनेसे विदित होता है कि सादीकी नीतिशिक्षा कितनी विस्तीर्ण है—

प्रथम अध्याय	न्याय और राजनीति	द्वितीय अध्याय	दया
तृतीय ,,	प्रेम	चतुर्थ ,,	विनय
पञ्चम ,,	धैर्य्य	षष्ठ ,,	सन्तोष
सप्तम ,,	शिक्षा	अष्टम ,,	कृतज्ञता
नवम ,,	प्रायश्चित्त	दशम	ईश्वर प्रार्थना

नीतिग्रन्थोंकी आवश्यकता यों तो जन्मभर रहती है लेकिन पढ़नेका सबसे उपयुक्त समय बाल्यावस्था है। उस समय उनके मानवचरित्रका आरंभ होता है इसी लिए पाठ्यपुस्तकोंमे बोस्तांका इतना प्रचार है। संसारकी कई प्रसिद्ध भाषाओंमें इसके अनुवाद हो चुके हैं। सर्वसाधारणमें इसके जितने शेर लोकोक्तिके रूपमें प्रचलित हैं उतने गुलिस्तांके नहीं। यहां हम उदाहरणकी भांति कुछ कथायें देकर ही सन्तोष करेंगे।

बोस्तांकी कथायें

सीरिया देशका एक बादशाह जिसका नाम "सालेह" था कभी कभी अपने एक गुलामके साथ भेष बदलकर बाज़ारोंमें निकला करता था। एकबार उसे एक मस्जिदमें दो फ़क़ीर मिले। उनमेंसे एक दूसरेसे कहता था कि अगर यह बादशाह लोग जो भोग-विलासमें जीवन व्यतीत करते हैं स्वर्गमें आवेंगे तो मैं उनकी तरफ़ आंख उठाकर भी न देखूंगा। स्वर्गपर हमारा

अधिकार है क्योंकि हम इस लोकमें दुःख भोग रहे हैं। अगर सालेह वहां बाग़की दीवारके पास भी आया तो जूतेसे उसका भेजा निकाल लूंगा। सालेह यह बातें सुनकर वहांसे चला आया। प्रातःकाल उसने दोनों फ़क़ीरोंको बुलाया और यथोचित आदर सत्कार करके उच्चासनपर बैठाया। उन्हें बहुत सा धन दिया। तब उनमेंसे एक फ़क़ीरने कहा, हे बादशाह तू हमारी किस बातसे ऐसा प्रसन्न हुआ? बादशाह हर्षसे गद्गद् होकर बोला, मैं वह मनुष्य नहीं हूं कि ऐश्वर्य्यके अभिमानमें दुर्बलोंको भूल जाऊं। तुम मेरी ओरसे अपना हृदय साफ़ कर लो और स्वर्गमें मुझे ठोकर मारनेका विचार मत करो। मैंने आज तुम्हारा सत्कार किया है, तुम कल मेरे सामने स्वर्गका द्वार न बन्द करना।

ईरान देशका बादशाह दारा एक दिन शिकार खेलने गया और अपने साथियोंसे छूट गया। कहीं खड़ा इधर उधर ताक रहा था कि एक चरवाहा दौड़ता हुआ सामने आया। बादशाहने इस भयसे कि यह कोई शत्रु न हो तुरंत धनुष चढ़ाया। चरवाहेने चिल्लाकर कहा, हे महाराज, मैं आपका वैरी नहीं हूं। मुझे मारनेका विचार मत कीजिये। मैं आपके घोड़ोंको इसी चरागाहमें चराने लाया करता हूं। तब बादशाहको धीरज हुआ। बोला, तू बड़ा भाग्यवान था कि आज मरते मरते बच गया। चरवाहा हंसकर बोला, महाराज, यह बड़े खेदकी बात है कि राजा अपने मित्रों और शत्रुओंको न पहचान सके। मैं हज़ारोंबार आपके

सामने गया हूं। आपने घोड़ेके सम्बन्धमें मुझसे बातें की है। आज आप मुझे ऐसा भूल गये। मैं तो अपने घोड़ोंको लाखों घोड़ोंमें पहचान सकता हूं। आपको आदमियोंकी पहचान होनी चाहिए।

बादशाह "उमर" के पास एक ऐसी बहुमूल्य अंगूठी थी कि बड़े बड़े जौहरी उसे देखकर दंग रह जाते। उसका नगीना रातको तारेकी तरह चमकता था। संयोगसे एक बार देशमें अकाल पड़ा। बादशाहने अंगूठी बेच दी और उसने एक सप्ताहतक अपनी भूखी प्रजाका उदर पालन किया। बेचनेके पहले बादशाहके शुभचिन्तकोंने उसे बहुत समझाया कि ऐसी अपूर्व अंगूठी मत बेचिये, फिर न मिलेगी। उमर न माना। बोला, जिस राजाकी प्रजा दुःखमें हो उसे यह; अंगूठी शोभा नहीं देती। रत्नजटित आभूषणोंको ऐसी दशामें पहिनना कब उचित कहा जा सकता है कि जब मेरी प्रजा दाने दानेको तरसती हो।

दमिश्क़में एक बार ऐसी अनावृष्टि हुई कि बड़ी बड़ी नदियां और नाले सूख गये, पानीका कहीं नाम न रहा। कहीं था तो अनाथोंका आंखोंमें। यदि किसी घरसे धुआं उठता था तो वह चूल्हेका नहीं किसी विधवा; दीनाकी आहका धुआं था। उस समय मैंने अपने एक धनवान

मित्रको देखा, जो उदासीन, सूखकर कांटा हो गया था। मैंने कहा, भाई तुम्हारी यह क्या दशा हो रही है, तुम्हारे घरमें किस बातकी कमी है? यह सुनते ही उसके नेत्र सजल हो गये। बोला, मेरी यह दशा अपने दुःखसे नहीं, वरन् दूसरोंके दुःखसे हुई है। अनाथोंको क्षुधासे बिलखते देखकर मेरा हृदय फटा जाता है। वह मनुष्य पशुसे भी नीच हैं जो अपने देशवासियों-के दुःखसे व्यथित न हो।

एक दुष्ट सिपाही किसी कुंएमें गिर पड़ा। सारी रात पड़ा रोता चिल्लाता रहा। कोई सहायक न हुआ। एक आदमीने उलटे यह निर्दयता की कि उसके सिरपर एक पत्थर मार कर बोला—दुरात्मन्, तूने भी कभी किसीके साथ नेकी की है जो आज दूसरोंसे सहायताकी आशा रखता है। जब हज़ारों हृदय तेरे अन्यायसे तड़प रहे है, तो तेरी सुधि कौन लेगा। कांटे बोकर फूलकी आशा मत रख।

एक अत्याचारी राजा देहातियोंके गधे बेगारमें पकड़ लिया करता था, एक बार वह शिकार खेलने गया और एक हिरनके पीछे घोड़ा दौड़ाता हुआ अपने आदमियोंसे बहुत आगे निकल गया। यहांतक कि सन्ध्या हो गयी। इधर उधर अपने साथियोंको देखने लगा। लेकिन कोई देख न पड़ा। विवश होकर निकटके एक गांवमें रात काटनेकी ठानी। वहां क्या देखता है कि एक देहाती अपने मोटे ताज़े गधेको डंडोंसे

मार मारकर उसके धुर्रे उड़ा रहा है। राजाको उसकी यह कठोरता बुरी मालूम हुई। बोला, अरे भाई क्या तू इस दीन पशुको मार ही डालेगा ! तेरी निर्दयता पराकाष्ठाको पहुच गयी। यदि ईश्वरने तुझे बल दिया है तो उसका ऐसा दुरुपयोग मत कर। देहातीने बिगड़कर कहा, तुमसे क्या मतलब है ? मैं जाने क्या समझकर इसे मारता हूं। राजाने कहा, अच्छा बहुत बक-बक मत कर, तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है, शराब तो नहीं पी ली ? देहातीने गम्भीर भावसे कहा. मैंने न शराब पी है, न पागल हूं, मैं इसे केवल इसी लिये मारता हूं जिससे यह इस देशके अत्याचारी राजाके किसी कामका न रहे। लगड़ा और बीमार होकर मेरे द्वारपर पड़ा रहे, यह मुझे स्वीकार है। लेकिन राजाको बेगारमें देना स्वीकार नहीं। राजा यह उत्तर सुनकर चुप रह गया। रात तारे गिन-गिन कर काटी। प्रातः-काल उसके आदमी खोजते हुए वहां आ पहुचे। जब खा पीकर निश्चिन्त हुआ तो राजाको उस गंवारको याद आयी। उसे पकड़वा मंगाया और तलवार खींचकर उसका सिर काटनेपर तैयार हुआ। देहाती जीवनसे निराश हो गया और निर्भय होकर बोला, हे राजा, तेरे अत्याचारसे सारे देशमें हाय हाय मची हुई है। कुछ मैं ही नहीं बल्कि तेरी समस्त प्रजा तेरे अत्याचारसे घबड़ा उठी है। यदि तुझे मेरी बात कड़ी लगती है तो न्याय कर कि फिर ऐसी बातें सुननेमें न आवें। इसका उपाय मेरा सिर काटना नहीं, बल्कि अत्याचारको छोड़ देना है। राजाके

हृदयमें ज्ञान उत्पन्न हो गया। देहातीको क्षमा कर दिया और उस दिनसे प्रजापर अत्याचार करना छोड़ दिया।

सुना है कि एक फ़क़ीरने किसी बादशाहसे उसके अत्याचारोंकी निन्दा की। बादशाहको यह बात बुरी लगी और उसे क़ैद कर दिया। फ़क़ीरके एक मित्रने उससे कहा, तुमने यह अच्छा नहीं किया। बादशाहोंसे ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिये। फ़क़ीर बोला, मैंने जो कुछ कहा वह सत्य है। इस क़ैदका डर, दो चार दिनकी बात है। बादशाहके कानमें यह बात पहुंची। फ़कीरको कहला भेजा, इस भूलमें न रहना कि दो चार दिनमें छुट्टी हो जायगी, तुम उसी क़ैदमें मरोगे। फ़क़ीर यह सुनकर बोला, जाकर बादशाहसे कह दो कि मुझे यह धमकी न दे। यह ज़िन्दगी दो चार दिनसे ज़्यादा न रहेगी, मेरे लिए दुःख सुख दोनों बराबर हैं। तू ऊंचे आसनपर बैठा दे तो उसकी खुशी नहीं, सिर काट डाल तो उसका कुछ रंज नहीं। मरने पर हम और तुम दोनो बराबर हो जायंगे। दयाहीन बादशाह यह सुनकर और भी बिगड़ा, और हुक्म दिया कि इसकी ज़बान तालूसे खींच ली जाय। फ़क़ीर बोला, मुझको इसका भी भय नहीं है। खुदा मेरे मनका हाल बिना कहें ही जानता है। तू अपनेको रो कि जिस शुभ दिनको मरेगा देशमें आनन्दोत्सवकी तरंगें उठने लगेंगी।

एक कवि किसी सज्जनके पास जाकर बोला, मैं बड़ी विपत्तिमें पड़ा हुआ हूं, एक नीच आदमीके मुझपर कुछ रुपये आते हैं। इस ऋणके बोझसे मैं दबा जाता हूं। कोई दिन ऐसा नहीं जाता कि वह मेरे द्वारका चक्कर न लगाता हो। उसकी बाण सरीखी बातोंने मेरे हृदयको चलनी बना दिया है। वह कौन सा दिन होगा कि मैं इस ऋणसे मुक्त हो जाऊंगा। सज्जन पुरुषने यह सुनकर उसे एक अशरफ़ी दी। कवि अति प्रसन्न होकर चला गया। एक दूसरा मनुष्य वहां बैठा था। बोला, आप जानते हैं वह कौन है। वह ऐसा धूर्त है कि बड़े बड़े दुष्टोंके भी कान काटता है। वह अगर मर भी जाय तो रोना न चाहिए। सज्जनने उससे कहा चुप रह, किसीकी निन्दा क्यों करता है। अगर उसपर वास्तवमें ऋण है तब तो उसका गला छूट गया। लेकिन यदि उसने मुझसे धूर्तता की है तब भी मुझे पछतानेकी ज़रूरत नहीं क्योंकि रुपये न पाता तो वह मेरी निन्दा करने लगता।

मैंने सुना है कि हिजाजके रास्तेपर एक आदमी पग पगपर नमाज़ पढ़ता जाता था। वह इस सद्मार्गमें इतना लीन हो रहा था कि पैरोंसे कांटे भी न निकालता था। निदान उसे अभिमान हुआ कि ऐसी कठिन तपस्या दूसरा कौन कर सकता है। तब आकाशवाणी हुई कि भले आदमी, तू अपनी तपस्याका अभिमान मत कर। किसी मनुष्यपर दया करना पग पगपर नमाज़ पढ़नेसे उत्तम है।

एक दीन मनुष्य किसी धनीके पास गया और कुछ मांगा। धनी मनुष्यने देनेके नाम नौकरसे धक्के दिलवाकर उसे बाहर निकलवा दिया। कुछ काल उपरान्त समय पलटा। धनीका धन नष्ट हो गया, सारा कारोबार बिगड़ गया। खाने तकका ठिकाना न रहा। उसका नौकर एक ऐसे सज्जनके हाथ पड़ा, जिसे किसी दीनको देखकर वही प्रसन्नता होती थी जो दरिद्रको धनसे होती है। अन्य नौकर-चाकर छोड़ भागे। इस दुरवस्थामें बहुत दिन बीत गये। एक दिन रातको इस धर्मात्माके द्वारपर किसी साधुने आकर भोजन मांगा। उसने नौकरसे कहा उसे भोजन दे दो। नौकर जब भोजन देकर लौटा तो उसके नेत्रोंसे आंसू बह रहे थे। स्वामीने पूछा, क्यों रोता है? बोला, इस साधुको देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। किसी समय मैं उसका सेवक था। उसके पास धन, धरती सब था। आज उसकी यह दशा है कि भीख मांगता फिरता है। स्वामी सुनकर हंसा और बोला, बेटा, संसारका यही रहस्य है। मै भी वही दीन मनुष्य हूं जिसे इसने तुझसे धक्के देकर बाहर निकलवा दिया था।

—०—

याद नहीं आता कि मुझसे किसने यह कथा कही थी कि किसी समय यमनमें एक बड़ा दानी राजा था। वह धनको तृणवत् समझता था, जैसे मेघसे जलकी वर्षा होती है उसी तरह उसके हाथसे धनकी वर्षा होती थी। हातिमका नाम भी कोई उसके सामने लेता तो चिढ़ जाता। कहा करता कि उसके

पास न राज्य है न ख़ज़ाना, उसकी और मेरी क्या बराबरी? एक बार उसने किसी आनन्दोत्सवमें बहुतसे मनुष्योंको निमन्त्रण दिया। बातचीतमें प्रसंगवश हातिमकी भी चर्चा आ गयी और दो चार मनुष्य उसकी प्रशंसा करने लगे। राजाके हृदयमें ज्वाला सी दहक उठी। तुरन्त एक आदमीको आज्ञा दी कि हातिमका सिर काट लाओ। वह आदमी हातिमकी खोजमें निकला। कई दिनके बाद रास्तेमें उसकी एक युवकसे भेंट हुई। वह अति गुणी और शीलवान् था। घातकको अपने घर ले गया, बड़ी उदारतासे उसका आदर सम्मान किया। जब प्रातःकाल घातकने विदा मांगी तो युवकने अत्यन्त विनीत भावसे कहा कि यह आपहीका घर है, इतनी जल्दी क्यों करते हैं। घातकने उत्तर दिया कि मेरा जी तो बहुत चाहता है कि ठहरूं लेकिन एक कठिन कार्य्य करना है, उसमें विलम्ब हो जायगा। हातिमने कहा, कोई हानि न हो तो मुझसे भी बतलाओ कौनसा काम है, मैं भी तुम्हारी सहायता करूं। मनुष्यने कहा, यमनके बादशाहने मुझे हातिमको वध करने भेजा है। मालूम नहीं, उनमें क्यो विरोध है। तू हातिमको जानता हो तो उसका पता बता दे। युवक निर्भीकतासे बोला, हातिम मैं ही हूं, तलवार निकाल और शीघ्र अपना काम पूरा कर। ऐसा न हो कि विलम्ब करनेसे तू कार्य्य सिद्ध न कर सके। मेरे प्राण तेरे काम आवें तो इससे बढ़कर मुझे और क्या आनन्द होगा। यह सुनते ही घातकके हाथसे तलवार छूटकर ज़मीनपर गिर

पड़ी। वह हातिमके पैरोंपर गिर पड़ा और बड़ी दीनतासे बोला, हातिम तू वास्तवमें दानवीर है। तेरी जैसी प्रशंसा सुनता था उससे कहीं बढ़कर पाया। मेरे हाथ टूट जायं अगर तुझपर एक कंकरी भी फक्कूं। मैं तेरा दास हूं और सदैव रहूंगा। यह कहकर वह यमन लौट आया। बादशाहका मनोरथ पूरा न हुआ तो उसने उस मनुष्यका बहुत तिरस्कार किया और बोला, मालूम होता है कि तू हातिमसे डरकर भाग आया। अथवा तुझे उसका पता न मिला। उस मनुष्यने उत्तर दिया, राजन्, हातिमसे मेरी भेंट हुई लेकिन मैं उसका शील और आत्मसमर्पण देखकर उसके वशीभूत हो गया। इसके पश्चात् उसने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। बादशाह सुनकर चकित हो गया और स्वयं हातिमकी प्रशंसा करते हुए बोला, वास्तवमें वह दानियोंका राजा है, उसकी जैसी कीर्त्ति है वैसे ही उसमें गुण हैं।

—०—

बायज़ीद्के विषयमें कहा जाता है कि वह अतिथिपालनमें बहुत उदार था। एकबार उसके यहां यक बूढ़ा आदमी आया जो भूख प्याससे बहुत दुःखी मालूम होता था। बायज़ीद्ने तुरंत उसके सामने भोजन मंगवाया। वृद्ध मनुष्य भोजनपर टूट पड़ा। उसकी जिह्वासे 'बिस्मिल्लाह' शब्द न निकला। बायज़ीद्को निश्चय हो गया कि वह क़ाफिर है। उसे अपने घरसे निकलवा दिया। उसी समय आकाशवाणी हुई कि बायज़ीद् मैंने इस क़ाफिरका सौ वर्षतक पालन किया और तुमसे एक दिन भी न करते बन पड़ा।

किसी भक्तने सपनेमें एक साधूको नर्कमें और एक राजाको स्वर्गमें देखकर अपने गुरुसे पूछा कि यह उलटी बात क्योंकर हुई। गुरूजी बोले, उस राजाको साधुओं और सज्जनोंके सत्संगसे रुचि थी इसलिये उसने मरनेके पीछे स्वर्गमें उन्हींके संग वास पाया और उस साधुको राजाओं और अमीरोंकी संगतका शौक़ था सो वही वासना उसको नर्कमें उनकी मुलाहवतके लिए खींच लाई।

क़ारूं बादशाहको हज़रत मूसाने उपदेश किया कि भलाई वैसी ही गुप्त रीतिसे कर जैसे मालिकने तेरे साथ की है। उदारता वही है जिसमें निहोरेका मेल न हो तभी उसका फल मिलता है। सच्चे उपकारके पेड़की डालियां आकाशके परे पहुंचती हैं।

किसीने सपनेमें प्रलयकी लीला देखी कि एक भारी झुंड कुकर्मियोंका भय और कष्टसे चिल्ला रहा है पर उनमेंसे एक आदमी मोतीकी माला पहने शीतल छांहमें बैठा है। उससे पूछा, तेरा किस कारण ऐसा आदर हुआ है। जवाब दिया, मैंने अपने द्वारपर अंगूरकी टट्टी लगाई थी जिसकी छांहमें एकबार एक महात्माने विश्राम किया था।

एक बुद्धिमान अपने लड़कोंको समझाया करते थे कि बेटा, विद्या सीखो, संसारके धन धामपर भरोसा न रक्खो, तुम्हारा अधिकार तुम्हारे देशके बाहर काम नहीं दे सकता और धनके

चले जानेका सदा डर रहता है चाहे उसे एकबारगी चोर ले जाय या धीरे धीरे ख़र्च हो जाय, परन्तु विद्या धनका अटूट स्रोत है और यदि कोई विद्वान् निर्धन हो जाय तौभी दुःखी न होगा क्योंकि उसके पास विद्यारूपी द्रव्य मौजूद है। एक समय दमिश्क़ नगरमें ग़द्र हुआ, सब लोग भाग गये तब किसानोंके बुद्धिमान लड़के बादशाहके मंत्री हुए और पुराने मंत्रियोंके मूर्ख लड़के गली गली भीख मांगने लगे। अगर पिताका धन चाहते हो तो पिताके गुण सीखो क्योंकि धन तो चार दिनमें चला जा सकता है।

किसीने हज़रत इमाम मुरशिद बिन ग़ज़ालीसे पूछा कि आपमें ऐसी भारी योग्यता कहांसे आयी। जवाब दिया, इस तरह कि जो बात मैं नहीं जानता था उसे दूसरोंसे पूछकर सीखनेमें मैंने लाज न की। यदि रोगसे छूटा चाहते हो तो किसी गुनी वैदको नाड़ी दिखाओ। जो बात न जानते हो उसके पूछनेमें लाज या आलस न करो क्योंकि इस सहज जुगतसे योग्यताकी सीधी सड़कपर पहुंच जाओगे।

एक बादशाहने मरते समय आज्ञा दी कि मेरे मरनेके सवेरे पहला आदमी जो नगरके फाटकमें घुसे वह बादशाह बनाया जाय। दैव-गतिसे सवेरे एक भिखमंगा फाटकमें घुसा। उसे लोगोंने लाकर राजगद्दीपर बिठा दिया। थोड़े ही

दिनोंमें उसकी अयोग्यता और निर्बलतासे कितने ही राजमंत्री और सूबे स्वतंत्र हो बैठे और आस पासके बादशाहोंने चढ़ाई करके बहुत सा हिस्सा उसके राज्यका छीन लिया। बेचारा भिक्षुक राजा इन उत्पातोंसे उदास और दुःखी था कि उसका एक पहला साथी जो बाहर गया हुआ था लौट कर आया और अपने पुराने मित्रको उसका अचरज भाग जगनेपर बधाई दी। बादशाह बोला, भाई मेरे अभागपर रोओ क्योंकि भीख मांगनेके कालमें तो मुझे केवल रोटीकी चिन्ता थी और अब देशभरकी झंझट और सम्हालका बोझ मेरे सिरपर है और चूकनेकी दशामें असह दुःख। संसारके जंजालमे जो फंसा सो मर मिटा, यहांका सुख भी निपट दुःख रूप है, अब मेरी आंखोंके सामने साफ् दरसता है कि संतोषके बराबर दूसरा धन संसारमें नहीं हैं।

नवां अध्याय

सादीकी लोकोक्तियां

किसी लेखककी सर्वप्रियता इस बातसे भी देखी जाती है कि उसके वाक्य और पद कहावतोंके रूपमें कहांतक प्रचलित हैं। मानवचरित्र, पारस्परिक व्यवहार, आदिके सम्बन्धमें जब लेखककी लेखनीसे कोई ऐसा सारगर्भित वाक्य निकल जाता है जो सर्व-व्यापक हो तो वह लोगोंकी ज़बानपर चढ़ जाता है। गोस्वामी तुलसीदासजीकी कितनी ही चौपाइयां कहावतोंके रूपमें प्रचलित हैं। अंग्रेज़ोमें शेक्सपियरके वाक्योंसे सारा साहित्य भरा पड़ा है। फ़ारसीमें जनताने यह गौरव शेख़सादीको प्रदान किया है। इस क्षेत्रमे वह फ़ारसीके समस्त कवियोंसे बढ़े चढ़े हैं। यहां उदाहरणके लिए कुछ वाक्य दिये जाते हैं—

अगर हिन्ज़िल ख़ुरी अज़ दस्ते ख़ुशख़ूय,
बेह अज़ शरीनी अज़ दस्ते तुरुशरूय।

कवि रहीमके इस दोहेमें यही भाव इस तरह दर्शाया गया है—

अमी पियावत मान बिन, रहिम हमें न सुहाय।
प्रेम सहित मरिबो भलो, जो विष देइ बुलाय॥

आनांकि ग़नी तरन्द मुहताज तरन्द।

जो अधिक धनाढ्य हैं वही अधिक मोहताज हैं।

हर ऐब कि सुल्तां बेपसन्दद हुनरस्त।

यदि राजा किसी ऐबको भी पसन्द करे तो वह हुनर हो जाता है।

हाजते मश्शाता नेस्त रूय दिलाराम रा।

सुन्दरता बिना शृंगार हीके मनको मोहती है।

स्वाभाविक सौन्दर्य्य जो सोहे सब अंग माहिं।
तो कृत्रिम आभरनकी आवश्यकता नाहिं॥

परतवे नेकां न गीरद हरकि बुनियादश बदस्त।

जिसकी अस्ल खराब है उसपर सज्जनोंके सत्संगका कुछ असर नहीं होता।

दुश्मन न तवां हक़ीरो बेचारा शुमुर्द।

शत्रुको कभी दुर्बल न समझना चाहिये।

आक़बत गुर्गज़ादा गुर्ग शवद।

भेड़ियेका बच्चा भेड़िया ही होता है।

दर बाग़ लाला रोयदो दर शोर बूम ख़स।

लाला फूल, बाग़में उगता है, ख़स-जो घास है, ऊसरमें।

तवंगरी बदिलस्त न बमाल,
बुज़ुर्गी बअक़्लस्त न बसाल।

धनी होना धनपर नहीं वरन् हृदयपर निर्भर है, बड़प्पन अवस्थापर नहीं बरन् बुद्धिपर निर्भर है।

सधन होन तैं होत नहिं, कोऊ लच्छमीवान।
मन जाको धनवान है, सोई धनी महान॥

हसूद रा चे कुनम को ज़े खुद बरंज दरस्त।

ईर्ष्यालु मनुष्य स्वयं ही ईर्षा-अग्निमें जला करता है उसे और सताना व्यर्थ है।

क़द्रे आफ़ियत आंकसे दानद कि बमुसीबते गिरफ्तार आयद

दुःख भोगनेसे सुखके मूल्यका ज्ञान होता है।

विपति भोग भोग गए, जिन लोगनि बहु बार।
सम्पतिके गुण जानहीं, वे ही भले प्रकार।

चु अज़वे बदर्द आवुरद रोज़गार,
दिगर अज़वहारा न मानद क़रार।

जब शरीरके किसी अंगमें पीड़ा होती है तो सारा शरीर व्याकुल हो जाता है।

हर कुजा चश्मए बुवद शीरीं,
मरदुमों मुर्गों मोर गिर्दायन्द।

विमल मधुर जल सों भरा, जहां जलाशय होय।
पशु पक्षी अरु नारि नर, जात तहां सब कोय॥

आंरा कि हिसाब पाकस्त अज़ मुहासिबा चे बाक।

जिसका लेखा साफ है उसे हिसाब समझानेवालेका क्या डर?

दोस्त आँ बाशद कि गीरद दस्ते दोस्त।
दर परेशाँ हालि ओ दरमांदगी।

मित्र वही है जो विपत्तिमें काम आवे।

तोपाक बाश बिरादर! मदार अज़ कस बाक,
ज़नन्द जामये नापाक गाज़ुराँ बर संग।

तू दुराइयोंसे पवित्र (दूर) रह तो तेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। धोबी केवल मैले कपड़े को पत्थरपर पटकता है।

चु अज़ क़ौमे यके बेदानिशी कर्द,
न केहरा मन्ज़िलत मानद न मेहरा।

किसी जातिके एक आदमीसे बुराई हो जाती है तो (सारीकी सारी जाति बदनाम हो जाती है) न छोटेकी इज्ज़त रहती है न बड़े की।

पाय दर ज़ञ्जीर पेशे दोस्ताँ,
बेह कि बा बेगानगाँ बोस्ताँ।

मित्रोंके साथ बन्दीगृह भी स्वर्ग है पर दूसरोंके साथ उपवन नरक समान है।

नेक बाशी व बदत गोयद ख़ल्क़,
बेह कि बद बाशी व नेकत गोयन्द।

सद मार्गपर चलते हुए अगर लोग बुरा कहें तो यह उससे अच्छा है कि कुमार्गपर चलते हुए लोग तुम्हारी प्रशंसा करें।

बातिलस्त उञ्चे मुद्दई गोयद,
विपक्षीकी बात मिथ्या समझी जाती है।

मर्द बायद कि गीरद अन्दर गोश,
गर नविश्तास्त पन्द बर दीवार।

मनुष्यको चाहिए कि यदि दीवारपर भी उपदेश लिखा हुआ मिले तो उसे ग्रहण करे।

हमरह अगर शिताब कुनद हमरहे तो नेस्त ।

तेरा साथी जल्दी करता है तो वह तेरा साथी नहीं है ।

हक्का कि बा उकूबत दोज़ख़ बराबरस्त,

रफतन ब पायमर्दी हमसाया दर बहिश्त ।

पड़ोसीकी सिफारिशसे स्वर्गमें जाना नरकमें जानेके तुल्य है ।

रिज़्क़ हरचन्द बेगुमां बरसद,

शर्ते अक़्लस्त जुस्तन अज़ दरहा ।

यद्यपि भूखों कोई नहीं मरता, ईश्वर सबकी सुधि लेता है, तथापि बुद्धिमान आदमीका धर्म है कि उसके लिए प्रयत्न करे ।

बदोज़द तमा दीदए होशमन्द ।

तृष्णा चतुरको भी अन्धा बना देती है ।

गरदने बेतमा बुलन्द बुवद ।

निस्पृह मनुष्यका सिर सदा ऊंचा रहता है ।

निकोई बा बदाँ करदन चुनानस्त,

कि बद करदन बजाए नेक मरदां ।

दुर्जनोंके साथ भलाई करना सज्जनोंके साथ बुराई करनेके समान है ।

यके नुक़साने माया दीगर शुमातते हमसाया ।

गांठसे धन जाय लोग हंसे ।

ख़ताये बुज़ुर्गां गिरफ्तन ख़तास्त ।

बड़ोंका दोष दिखाना दोष है ।

ख़रे ईसा अगर बमक्का रवद,
चूं बयायद हनोज़ ख़र बाशद।

कौआ कभी हंस नहीं हो सकता।

जौरे उस्ताद बेह ज़मह्रे पिदर।

गुरुकी ताड़ना पिताके प्यारसे अच्छी है।

करीमांरा बदस्त अन्दर दिरम नेस्त,
खुदावन्दाने न्यामतरा करम नेस्त।

दानियोंके पास धन नहीं होता और धनी दानी नहीं होते।

परागन्दा रोज़ी परागन्दा दिल।

वृत्तिहीन मनुष्यका चित्त स्थिर नहीं रहता।

पेशे दीवार उञ्चे गोई होशदार,
ता न बाशद दर पसे दीवार गोश।

दीवारके भी कान होते हैं, इसका ध्यान रख।

कि खुब्स नफ़्स न गरदद ब सालहा मालूम।

स्वभावकी नीचता बरसोंमें भी नहीं मालूम नहीं होती।

मुश्क आनस्त कि खुद बबूयद, न कि अत्तार बगोयद।

कस्तूरीकी पहचान उसकी सुगन्धिसे होती है गन्धीके कहनेसे नहीं।

कि बिसियार ख़्वारस्त बिसियार ख़्वार।

बहुत खानेवाले आदमीका कभी आदर नहीं होता।

कुहन जामए ख़ेश आरास्तन,
वेह अज जामए आरियत ख़्वास्तन।

अपने पुराने कपड़े मांगनीके कपड़ोंसे अच्छे हैं।

चु सायल अज़ तो बज़ारी तलब कुनद चीज़े,
वेदेह वगर न सितमगर बज़ोर बसितानद।

दोनोंको दे, वर्नः छीनकर ले लेंगे।

सखुनश तलख़ न ख़्वाही दहनश शीरीं कुन।

अगर किसीकी कड़वी बात नहीं सुनना चाहे तो उसका मुंह मीठा कर।

मोरचगांरा चु बुवद इत्तफ़ाक,
शेरेज़ियां रा वदरारन्द पोस्त।

अगर चिउटियाँ एका कर ले तो शेरकी खाल खींच सकती हैं।

हुनर वकार न आयद चु बख़्त बदशाह।

भाग्यहीन मनुष्यके गुण भी काम नहीं आते।

हरकि सुखन न संजद अज़ जवाब बरंजद।

जो आदमी तौलकर बात नहीं करता उसे कठोर बातें सुननी पड़ती हैं।

अन्दक अन्दक बहम शवद बिसियार।

एक एक दाना मिलकर ढेर हो जाता है।

यद्यपि सादीने जो उपदेश किये हैं वह अन्य लेखकोंके यहां भी पाये जाते हैं, लेकिन फ़ारसीमें सादीकी सी ख्याति किसीने नहीं पाई थी। इससे विदित होता है कि लोकप्रियता बहुत कुछ भाषा सौन्दर्य्यपर अवलम्बित होती है। यहां हमने सादीके कुछ वाक्य दिये हैं लेकिन यह समझना भूल होगी कि केवल यही प्रसिद्ध हैं। सारी गुलिस्तां ऐसे ही मार्मिक वाक्योंसे परिपूर्ण है। संसारमें ऐसा एक भी ग्रन्थ नहीं है जिसमें ऐसे वाक्योंका इतना आधिक्य हो जो कहावत बन सकते हों।

गोस्वामी तुलसीदासजीपर यह दोषारोपण किया जाता है कि उन्होंने कई भ्रमोत्पादक चौपाइयां लिखकर समाजको बड़ी हानि पहुंचाई है। कुछ लोग सादीपर भी यही दोष लगाते हैं और यह वाक्य अपने पक्षकी पुष्टिमें पेश करते हैं—

अगर शहरोज़ रा गोयद शबस्त ईं,
बबायद गुफ़्त ईनक माहो परवीं।

अगर बादशाह दिनको रात कहे तो कहना चाहिये कि हां, हुजूर, देखिये चांद निकला हुआ है।

इसपर यह आक्षेप किया जाता है कि सादीने बादशाहों-को झूठी खुशामद करनेका परामर्श दिया है। लेकिन जिस निर्भयता और स्वतन्त्रतासे उन्होंने बादशाहोंको ज्ञानोपदेश किया है उसपर विचार करते हुए सादीपर यह आक्षेप करना बिल-कुल न्याय सगत नहीं मालूम होता। इसका अभिप्राय केवल

यह है कि खुशामदी लोग ऐसा करते हैं। इसी तरह लोग इस वाक्यपर भी एतराज़ करते हैं—

दरोग़े मसलहत आमेज़ बेह, अज़ रास्ती फ़ितना अंगेज़।

वह झूठ जिससे किसीकी जान बचे उस सचसे उत्तम है जिससे किसीकी जान जाय।

कहा जाता है कि असत्य सर्वथा अक्षम्य है और सादीका यह वाक्य झूठके लिये रास्ता खोल देता है। लेकिन विवादके लिए इस वाक्यकी उपेक्षा चाहे की जाय और आदर्शके उपासक चाहे इसे निन्द्य समझें, पर कोई सहृदय मनुष्य इसकी उपेक्षा न करेगा। इसके साथ ही सादीने आगे चलकर एक और वाक्य लिखा है जिससे विदित होता है कि वह स्वार्थके लिए किसी हालतमें भी झूठ बोलना उचित नहीं समझते थेः—

गर रास्त सुख़न गोई व दर बन्द व मानी,
बेह ज़ांकि दरोग़त देहद अज़ बन्द रिहाई।

यदि सच बोलनेसे तुम क़ैद हो जाओ तो यह उस झूठसे अच्छा है जो क़ैदसे मुक्त कर दे।

इससे जान पड़ता है कि पहला वाक्य केवल दूसरोंकी विपत्तिके पक्षमें है, अपने लिये नहीं।

दसवाँ अध्याय

ग़ज़लें

ग़ज़ल फ़ारसी कविताका प्रधान अङ्ग है। कोई कवि, जबतक कि वह ग़ज़ल कहनेमें निपुण न हो कविसमाजमें आदरका स्थान नहीं पाता।

यो तो ग़ज़ल श्रृङ्गारका विषय है, किन्तु कवियोंने इसके द्वारा सभी रसोका वर्णन किया है, जिसमें भक्ति, वैराग्य, संसारकी असारता आदि विषय बड़े महत्वके हैं। ग़ज़लोंके संग्रहको फ़ारसीमें दीवान कहते हैं। सादीकी सम्पूर्ण ग़ज़लोंके चार दीवान हैं जिनके नाम लिखनेकी कोई ज़रूरत नहीं मालूम होती। इन चारों दीवानोंमे कोई तो युवाकालमें, कोई प्रौढ़ावस्थामे लिखा गया है किन्तु उनमें कहीं भावका वह अन्तर नहीं पाया जाता जो बहुधा भिन्न भिन्न अवस्थाकी कविताओमें मिला करता है। उनकी सभी ग़ज़लें सरलता और वाक्य निपुणतामें समतुल्य हैं। और यह कविकी रचनाशक्तिका बहुत बड़ा प्रमाण है।

यद्यपि शेख़ सादीके पूर्वकालीन कविगण भी ग़ज़लें कहते थे, किन्तु उस समय क़सीदे और मसनवीकी प्रधानता थी। ग़ज़लोंमें साधारण भाव प्रकट किये जाते थे और श्रृङ्गारको

छोड़कर दूसरे रसोंका उसमें प्रायः अभाव था। सादीने ग़ज़लोंमें ऐसे गूढ़ रहस्यों और मर्मस्पर्शी भावोंको व्यक्त किया कि लोग क़सीदे तथा मसनवियोंको छोड़कर ग़ज़लोंपर टूट पड़े और ग़ज़ल फ़ारसी कविताका प्रधान अंग बन गयी। इसीसे समालोचकोंने सादीको ग़ज़लमें प्रधान माना है। सादीके पहलेके दो कवियोने क़सीदे कहनेमें विशेष प्रतिभा दिखाई है—अनवर और ख़ाक़ानी ये दोनों कवि इस विषयमें अद्वितीय हैं। लेकिन उनकी ग़ज़लोंमें वह मार्मिकता नहीं पाई जाती जो सादीने अपनी ग़ज़लोंमें कूट कूट कर भर दी। बात यह है कि ग़ज़ल कहनेके लिए हृदयमें नाना प्रकारके भावोंका होना अत्यावश्यक है, केवल इतना ही नहीं, उन भावोंको कुछ ऐसे अनूठे ढंगसे वर्णन करना चाहिए कि उनसे सुननेवाला तुरन्त मुग्ध हो जाय।

अनवरीका एक शैर है:—

हमा बामन जफ़ा कुनद लेकिन, बजफ़ा हेच अज़ो नयाज़ारम

भावार्थ—वह [प्रियतम] मेरे ऊपर सदैव ज़ुल्म किया करता है, किन्तु मैं इनकी ज़रा भी शिकायत नहीं करता।

भावके सुन्दर होनेमें संदेह नहीं, क्योंकि दुखड़ा आशिकोंकी पुरानी बात है। किन्तु कविने उसे स्पष्ट रूपसे वर्णन करके उसकी मिट्टी ख़राब कर दी। देखिये इसी भावको सादी साहब किस ढंगसे दर्शाते हैं:—

क़ादिरी बर हरचेमी ख़्वाही बजुज़ आज़ारे मन,
ज़ांकि गर शमशीर बर फ़रक़म ज़नी आज़ार नेस्त।

भावार्थ—तू सब कुछ कर सकता है किन्तु मुझपर जुल्म नहीं कर सकता, क्योंकि यदि तू मेरे सिरपर तलवार मारे तो उससे मुझे कष्ट नहीं होता।

यह स्मरण रखना चाहिये कि ग़ज़ल प्रधानतः शृङ्गारका विषय है, इसलिये कविगण जब इसके द्वारा भक्ति, वैराग्य, वन्दना आदिका वर्णन करते हैं तो उनको रसिकताकी ही आड़ लेनी पड़ती है। अतएव शराबकी मस्तीसे ईश्वर प्रेम, शराबसे ज्ञान आत्म-दर्शन; शराब पिलानेवाले साकीसे गुरु, ज्ञानी; माशूक़ (प्रियतमा) से ईश्वरका बोध कराते हैं। इसी प्रकार वह बुल्बुलसे प्रेमी, उसके पिंजरेसे दुःखमय संसार और मालीसे विपत्तिका आशय प्रकट करते हैं। यह प्रणाली इतनी सर्वप्रसिद्ध हो गयी है कि किसीको कविके आंतरिक भावोंके जाननेमे सन्देह नहीं हो सकता। भक्तिके लिये हृदयकी स्वच्छता तथा निर्मलताका होना आवश्यक है। कपटके साथ भक्तिका मेल नहीं हो सकता, इसलिये कविगण भगवे बानेकी निन्दा करनेसे कभी नही थकते। मस्जिदके आबिदकी अपेक्षा जो संसारको दिखानेके लिये यह स्वांग रचे हुए हैं वह वासनाओंमें फंसा हुआ मनुष्य कहीं सहृदय है जिसके हृदयमें कपट नहीं। विद्वत्ता और धर्म तथा कर्तव्यपरायणता आदि गुणोंसे जो मनुष्यमे बहुधा अभिमानका उद्भव करते हैं, अज्ञान, मूर्खता तथा भ्रष्टता कहीं उत्तम है जो मानव हृदयमें विनय, दीनता तथा नम्रता उत्पन्न करती है। इसलिये कविगण साधुवेष, विद्वत्ता,

धार्मिकता, विवेक, आदिकी ख़ूब दिल खोलकर हंसी उड़ाते हैं और भ्रष्टता, मूर्खता रसिकताको ख़ूब सराहते हैं, वे पीतवस्त्रधारी महात्माओंको लताड़ते हैं, और शराबियों, तथा श्रृङ्गारियोंके आगे शीश झुकाते हैं, वे ज्ञानियोंको मूर्ख और मूर्खोंको ज्ञानी कहते हैं। शेख़सादीके पहले भी यह प्रणाली संस्कृत हो चुकी थी पर सादीने इसके प्रभाव और चमत्कारको उज्ज्वल कर दिया। और यह प्रणाली कुछ ऐसी सर्वप्रिय सिद्ध हुई कि बादवाले कवियोंने तो इन्हीं विषयोंको ग़ज़लका मुख्य अंग बना दिया और हाफ़िज़ने सादीको भी पीछे कर दिया।

अब हम सादीकी ग़ज़लोंके कुछ शेर उद्धृत करते है जिनको देखकर रसिकवृन्द स्वयं यह निर्णय कर सकेंगे कि इन ग़ज़लोंमें कितना लालित्य और रस भरा हुआ है।

अय कि गुफ़ती हेच मुशकिल चूं फिराक़े यार नेस्त,
गरउमीदे वस्ल बाशद आंचुनां दुशवार नेस्त।

भावार्थ—यद्यपि प्रियतमका वियोग बहुत कष्टजनक है, तथापि मिलापको आशा हो तो उसका सहना कुछ कठिन नहीं है।

हरको ब हमा उमरश सौदाय गुले बूदस्त,
दानद कि चरा बुलबुल दीवाना हमी बाशद।

भावार्थ—जिस मनुष्यने सारा जीवन किसी फूलके प्रेममें व्यतीत किया है वही जानता है कि बुलबुल क्यों दीवाना रहता है।

दिलो जानम ब तो मशग़ूलो निगह बर चपो रास्त
ता न दानन्द रक़ीबां कि तू मंज़ूरे मनी।

भावार्थ—मैं तो तेरी ओर तन्मय हूं पर आंखें दाहिने बायें फेरता रहता हूं जिससे प्रतिद्वन्दियोंको यह न ज्ञात हो सके कि तू मेरा प्रियतम है।

इस शेरमें कितना लालित्य है इसे रसिकजन स्वयं अनुभव कर सकते हैं।

दीगरां चूं व रवन्द अज़ नज़र अज़ दिल व रवन्द
तो चुनां दर दिले मन रफ़ता कि जां दर बदनी।

भावार्थ—साधारणतः जब कोई नजरोंसे दूर हो जाता है तो उसकी याद भी मिट जाती है, किन्तु तूने मेरे हृदयमें इस प्रकार प्रवेश किया है जैसा प्राण शरीरमें।

कितनी मनोरम उक्ति है!

शर्वते तल्ख़ तर अज दर्दे फ़िराक़त बायद
ता कुनद लज़्ज़ते वस्ले तो फ़रामोश मरा।

भावार्थ—तुझने प्रेमालिंगनके आनन्दको भुलानेके लिये तेरे वियोगसे भी दारुण दुःख चाहिये।

अन्य कवियोंने वियोग दुःख वर्णनमें ख़ूब आंसू बहाए हैं, पर सादी प्रेमालापके स्मरणमें विरहके दुःखको भूल जाता है। वियोग विस्मृतिका कितना अच्छा उपाय, कैसी अक्सीर दवा निकाली है।

बरअन्दलीबे आशिक़ गर बिपकनी क़फ़स रा
अज़ जौक़े अन्दरूनश परवायद दर न बाशद।

भावार्थ—प्रेममग्न बुलबुलके पिंजरेको यदि तू तोड़ डाले तो भी अपने हृदयानुरागके कारण उसे दरवाज़ेकी सुधि भी न रहेगी।

कितना लाजवाब शेर है! बुलबुल प्रेमानुरागमें ऐसी तन्मय

हो रही थी कि यदि कोई उसके पिंजरेको तोड़ डाले तो भी वह उसमें से न निकले। अन्य कवियोंके आशिक़ कपड़े फाड़ते हैं, जंगलोंमें मारे मारे फिरते हैं, विरह कल्पनामें आठो पहर आंसूकी धारा बहाया करते हैं, मौका पाते ही क़ैद खानेसे भाग खड़े होते है, जंजीरोंको तोड़ डालते है, दीवारोंको फांद जाते है, और यदि इतना साहस न हुआ तो बहार और गुल और चमनकी यादमें तड़पते रहते हैं, पर सादी प्रेममें इतने मग्न हैं कि उन्हें किसी बातकी चिन्ता ही नहीं। प्रेमका कितना ऊंचा आदर्श है, उसके गहरे रहस्यको कितने मुग्धकारी, आनन्दमय शब्दोंमें वर्णन किया है।

बूद हमेश· पेश अज़ीं रस्मे तो बेगुनः कुशी
अज़ चे मरा नमी कुशी मन चे गुनाह करदा अम।

भावार्थ—इसके पहले तू बेगुनाहोंको क़त्ल किया करता था। मैंने क्या गुनाह किया है कि मुझे क़त्ल नहीं करता।

जाँ न दारद हरकि जानानेश नेस्त
तंग ऐशस्त आं कि बुस्तानेश नेस्त।

भावार्थ—वह प्राण शून्य है जिसका कोई प्राणेश्वर नहीं, वह भाग्यहीन है जिसके कोई बाग़ नहीं।

इस शेरमे भक्ति रसका कैसा गम्भीर स्वाद भरा हुआ है।

चुनां बमूए तो आशुफ्तः अम बबूए मस्त
कि नेस्तम ख़बर अज़ हर चे दर दो आलम हस्त।

भावार्थ—मै तेरे केशोंमें ऐसा उलझा और उनकी सुगन्धिमें ऐसा मस्त हू कि मुझे लोक, परलोककी कुछ सुधि ही नहीं।

गुलामे हिम्मते आनम कि पायवन्द यकेस्त
व जानिवे मुतअल्लिक़ शुद अज़ हज़ार वरूस्त ।

भावार्थ—मैं उसीका सेवक हूं जो केवल एकका अनुरागी है, जो एकका होकर हजारोंसे मुक्त हो जाता है।

निगाहे मन वतो वो दीगरां व तो मशगूल
मुआशिरां ज़े मयो आरिफ़ां ज़े साक़ी मस्त ।

भावार्थ—मेरी आंखें तेरी ओर हैं तुझसे अन्य लोग वातें कर रहे हैं। भोगियोंके लिये शराव चाहिये, ज्ञानी शराव पिलानेवालेको देखकर ही मस्त हो जाता है।

बड़े मार्केका शेर है, प्रेमानुरागके एक नाज़ुक पहलूको अत्यन्त भावपूर्ण रूपसे वर्णन किया है। भक्तोंको ईशचिन्तन ही सबसे वड़ा पदार्थ है, उसके दर्शन करनेकी उन्हें अभिलाषा नहीं। शराव पीकर मस्त हुए तो क्या वात रही, मजा तो जब है कि साक़ी (शराव पिलानेवाले) के दर्शन ही से आत्मतृप्त हो जाय।

दिले कि आशिक़ो साबिर बुवद मगर संगस्त
ज़े इश्क़ ता ब सबूरी हज़ार फ़र्संगस्त ।

भावार्थ—जिस हृदयमें प्रेमके साथ धैर्य भी है वह पत्थर है। प्रेम और धैर्यमें सौ कोसका अन्तर है।

चे तरबियत शुनवम या मसलहत वीनम
मरा कि चश्म व साक़ी व गोश बर चंगस्त ।

भावार्थ—मैं किसीका उपदेश क्या सुनूं और क्या उचित अनुचितका विचार करूं, मेरी आंखें तो साकीकी ओर और कान चंगकी ओर लगे हुए हैं। आशय स्पष्ट है।

खल्क मी गोयद कि जाहो फ़ज़्ल दर फ़र्ज़ानगीस्त
गो मुवाश ईं हा, कि मा रंदाने ना फ़र्ज़ाना एम ।

भावार्थ—संसार कहता है कि बुद्धि और चातुरीसे आदर और उच्चपद प्राप्त होता है, किन्तु हमको इन वस्तुओंकी चाह नहीं है, हम तो रसके भूखे हैं।

गर मय व जां दिहन्दत, बिसितां कि पेशे दाना
ज़ावे हयात ख़ुशतर ख़ाके शराबख़ाना ।

भावार्थ—अगर प्राणके बदलेमें भी शराब मिले तो सस्ती है, ले ले, क्योंकि शराबखानेकी मिट्टी भी अमृतसे उत्तम है ।

रूएस्त माह पैकरो मूएस्त मुश्क़बूय
हर लालए कि मी दमद अज़ ख़ाको संबुले ।

भावार्थ—मिट्टीसे जो लाले (एक प्रकारका फूल) या संबुल (एक प्रकारको घास) निकलते हैं, वास्तवमें प्रत्येक किसीका चन्द्रमुख या सुगन्धसे भरे हुए केश हैं।

संवुलकी केशसे उपमा दी जाती है। वेदान्तका सार एक शेरमें निकाल कर रख दिया है।

ग़ज़लोंका समाजपर क्या प्रभाव पड़ा इसके विषयमें कुछ कहना अनुपयुक्त न होगा। शृङ्गार रसकी कविता विलासिताको उत्तेजित करती है, यह एक सर्वसिद्ध बात है और जब शृङ्गारके साथ कवितामें विद्या, धर्म, आचार, नियम, संयम, और सिद्धान्तका अपमान भी किया जाय, तो उसकी विकारक शक्ति और भी बढ़ जाती है। इसमें संदेह नहीं कि सादी और अन्य कवियोंने कबीर साहबकी भांति ढोंग, ढकोसला, नुमाइशका अनादर

करने होके निमित्त यह रचना शैली ग्रहण की है और आचार, नीति तथा ज्ञानके बड़े बड़े जटिल और मर्मस्पर्शी विषय रूपक द्वारा दर्शाये हैं पर जनता इन ग़ज़लोंके आशयको अपने चित और मनकी वृत्तियोंके अनुसार ही समझती है। कीर्त्तनमें जो स्वर्गीय आनन्द एक भक्तको होगा वह विलासान्ध मनुष्यको कदापि नहीं हो सकता। वह अपने चरित्र और स्वभावको दुर्बलताके कारण ऊपरी आशय हीका आनन्द उठाता है। मर्म तक उसको स्थूल बुद्धि पहुंच ही नहीं सकती। यह शैली कुछ ऐसी सर्वप्रिय हो गयी है कि अब फारसी या उर्दू कवियोंको उसका त्याग या संशोधन करनेका साहस ही नहीं हो सकता। श्रोताओंको उन ग़जलोंमें कुछ आनन्द ही न आयगा जो इस शैलीके अनुकूल न हों। इस विषयमें सादीके उर्दू जीवनकार मौलाना अलताफ़ हुसेन हालीने बड़ी उपयुक्त बातें लिखी हैं, जिन्हें पढ़कर पाठक स्वयं जान जायंगे कि उर्दू हीके कवि और लेखक इस विषयमें क्या सम्मति रखते हैं :—

इन ग़ज़लोंके विषयसे प्रायः लोग परिचित हैं। यह सर्वदा बुद्धि और ज्ञान, मान और मर्य्यादा, धर्म और सिद्धान्त, धन और अधिकारकी उपेक्षा करती हैं तथा दरिद्रता और अपमान अविद्या और अज्ञानको सर्वश्रेष्ठ बतलाती हैं। संसारपर लात मारना, बुद्धिसे कभी काम न लेना, संतोष और विरतिके नशेमें अपने जीवनको नष्ट और मनुष्यत्वका पतन करना, संसारको असार और अनित्य समझते रहना, किसी वस्तुके तत्वके जानने-

की चेष्टा न करना, सुप्रबन्ध तथा मितव्ययतायको अवगुण समझना, जो कुछ हाथ लगे उसे तुरन्त व्यर्थ खो देना और इसी प्रकारकी और कितनी ही बातें उनसे प्रकट होती हैं। विदित ही है कि यह विषय बेफिक्रों और नवयुवकोंको स्वभावतः रुचिकर प्रतीत होते हैं ... . यद्यपि यह सिद्ध करना कठिन है कि हमारा वर्तमान नैतिक पतन इन्हीं ग़ज़लोंका परिणाम है, लेकिन इसमें संदेह नहीं कि शृङ्गार और वैराग्यकी कविताने इस दशाको पुष्ट करनेमें विशेष भाग लिया है।

ग्यारहवाँ अध्याय

क़सीदे

क़सीदा फ़ारसी कविताके उस अंगको कहते हैं जिसमे कवि किसी महान् पुरुष या किसी विशेष वस्तुकी प्रशंसा करता है। जिस प्रकार भूषण, मतिराम, केशव आदि कविजन अपने समकालीन महीपतियों या पदाधिकारियोंकी प्रशंसा करके नाम, धन तथा यश प्राप्त करते थे, उसी प्रकार मुसलमान बादशाहोंके दर्बारमें भी इसी विशेष कामके लिये कवियोको सम्मानका स्थान मिलता था। उनका काम यही था कि कतिपय अवसरोंपर अपने बादशाहका गुणगान करें। इसके लिए कवियोंको बड़ी बड़ी जागीरें मिलती

थी, यहां तक कि एक एक शेरका पारितोषिक एक एक लाख दीनार (जो २५) के बराबर होता है) तक जा पहुंचता था शिवाजीने भूषणका जैसा सत्कार किया था, यदि यह अत्युक्ति न हो तो ईरानी कवियोंके सम्बन्धमें भी उनके अलौकिक सत्कारकी कथायें सच्ची माननेमें कोई बाधा न होनी चाहिये। यह प्रथा ऐसी अधिक हो गयी थी कि किसी बादशाहका दर्बार कवियोंसे ख़ाली न होता था। इसके अतिरिक्त हज़ारों कवि भ्रमण करके बादशाहोंको क़सीदे सुनाते फिरते थे। विद्वानोंकी एक बड़ी संख्या इसी झूठी सराहनापर अपनी आत्माका बलिदान किया करती थी। और क़सीदोंकी रचना शैली ऐसी विकृत हो गयी थी कि खुदाकी पनाह! शाइर लोग प्रशंसामें ज़मीन और आसमानके कुल्लावे मिलाते थे। प्रशंसा क्या, वह एक प्रकारकी अप्रशंसा हो जाती थी। किसीके दानव्रतका बखान करते तो समुद्रके मोती और संसारकी समस्त खनिज सम्पदा उसके लिए थोड़ी हो जाती थी। उसकी वीरताको बखानते तो सूर्य्य और चन्द्र उसके घोड़ोंके टाप बन जाते थे। जो कवि जितना ही लम्बा और बे सिर पैरकी बातोंसे भरा हुआ क़सीदा कहे उसका उतना ही सम्मान होता था। इन क़सीदोंमें अत्युक्ति ही नहीं, बड़ा पाण्डित्य भरा जाता था; वेदान्त दर्शन तथा शास्त्रोंके बड़े बड़े गहन विषयोंका उनमें समावेश होता था। उनका एक एक शब्द अलंकारोंसे विभूषित किया जाता था। आज उन क़सीदोंको पढ़िये तो रचनेवालेकी विद्या, बुद्धि, तथा काव्य चमत्कारका

क़ायल होना पड़ता है। शेख़सादीके पूर्व इस प्रथाका बड़ा ज़ोर था। अनवरी, ख़ाक़ानी आदि कवि सम्राट् सादीके पहले ही अपने क़सीदे लिख चुके थे जिन्हें देखकर आज हम चकित हो जाते हैं। पर सादीने उस प्रचलित पद्धतिको ग्रहण न किया। उनका निर्भय, निस्पृह, विरक्त, जीवन इस कामके लिये न बना था। उन्हें स्वभावतः इस भाटपनेसे घृणा होती थी और सर्वोच्च कवियोको सांसारिक लाभके लिए अपनी योग्यताका इस भांति दुरुपयोग करते देखकर हार्दिक दुःख होता था। एक स्थानपर उन्होने लिखा है—लोग मुझसे कहते है कि हे सादी तू क्यों कष्ट उठाता है और क्यों अपनी कवित्व शक्तिसे लाभ नहीं उठाता? यदि तू क़सीदे कहे तो निहाल हो जाय। मगर मुझसे यह नहीं हो सकता कि किसी रईस 'या अमीरके द्वारपर अपना स्वार्थ लेकर भिक्षुकोंकी भांति जाऊं'। यदि कोई एक जौ भर गुणके बदले मुझको सौ कोष प्रदान कर दे तो वह चाहे कितना ही प्रशंसनीय हो पर मैं घृणित हो जाऊंगा।

लेकिन मनुष्यपर अपने समयका प्रभाव पड़ना स्वभाविक अतएव सादीने भी कसीदे कहे हैं, लेकिन उन्हें धन सम्पत्तिकी लालसा तो थी नहीं कि वह झूठी तारीफोंके पुल बांधता। अपने कसीदोंको उसने प्रायः महीधरों तथा अधिकारियोको न्याय, दया, नम्रता आदि गुणोंके सदुपदेशका साधन मात्र बनाया है। इन महानुभावोंको वह सामान्य रीतिसे उपदेश न दे सकता था, इसलिए क़सीदोंके द्वारा इस कर्त्तव्यका प्रतिपादन किया

है। जब किसीकी प्रशंसा भी की है तो सरल और स्वाभाविक रीतिसे। उनमें अलङ्कारो और उक्तियोंकी भरमार नहीं। और न वह केवल स्वार्थसिद्धिके अभिप्रायसे लिखे गये हैं, वरन् उनमे सच्ची सहृदयता और आत्मीयता झलकती है क्योंकि उन्होंने ऐसे हीं लोगोकी ऐसी प्रशंसा की हैं जो प्रशंसाके पात्र थे। उनके सरल क़सीदोंको देखकर बहुधा लोग अनुमान करते हैं कि सादी उनके रचनेमें कुशल न थे। पर वास्तवमे ऐसा नहीं है। वह सरल स्वभाव मनुष्य थे, एक साधारण सी बातको घुमा फिरा-कर शब्दोंके व्यर्थ आडम्बरके साथ वर्णन करनेकी उन्हे आदत न थी। और यद्यपि उनके क़सीदोंमें ओज और गुरुत्व नहीं है पर माधुर्य और सरलता कूट कूटकर भरी हुई है। इतना ही नही उनको पढ़कर हृदयपर एक पवित्र प्रभाव पड़ता है।

यहां हम सादीके दो क़सीदोके कुछ शेरोंका भावार्थ देते हैं जिससे उनकी रचनाशैलीका प्रमाण मिल जायगाः—

(१)

फारसके बादशाह अताबक अबूबक्रकी शानमें—

इस मुल्कमें बड़े बड़े बादशाहोंने राज्य किया लेकिन जीवनका अन्त हो जानेपर ठोकरें खाने लगे।

तुझे ईश्वरीय आज्ञाका पालन करना चाहिए, विभव और सम्पत्तिकी ज़रूरत नहीं, ढोलके सदृश गरजनेकी क्या आवश्य-कता है जब भीतर बिल्कुल ख़ाली हैं। कर्तव्य पालना सीख, यही स्वर्ग मार्गकी सामग्री है, उस दिन ऊदसीज़ (वह बर्तन

(जिसमें अगर जलाते हैं) और अंबरसाय (वह बर्तन जिसमें अम्बर घिसते हैं) कुछ काम न आयंगे।

जो मनुष्य प्रजाको दुःख दे वह देशका द्रोही है, उसके मारे जानेका हुक्म दे।

पूर्वसे पश्चिमतक अपना राज्य बढ़ा, पर रणभूमिमे मत जा, यह इस प्रकार हो सकता है कि दिलोंको अपने हाथमें ले, और उनकी मैल धो। मैं मिष्टभाषी कवियोंकी भांति यह न कहूंगा कि तू कस्तूरीकी वर्षा करनेवाला मेघ है।

जितनी आयु लिखी हुई है वह घट बढ़ नहीं सकती, तो यह कहनेसे क्या फ़ायदा कि तू कयामततक ज़िन्दा और सलामत रह।

(२)

फकीरोंका काम बादशाहोंकी बड़ाई करना नहीं हैं जो मैं कहूं कि तू समुद्रके समान अगाध और मेघके समान दानशील है।

मैं यह न कहूंगा कि दयामें तू औलियासे बढ़ा हुआ है, न यह कि न्यायमें तू बादशाहोंका नेता है।

और यदि यह सब गुण तुझमें है तो तुझे उपदेश करना और भी उत्तम है क्योंकि सच्चे प्रेम और श्रद्धाके प्रकट करनेका यही मार्ग है।

खुदाने यूसूफको इसलिए सम्मानित नहीं किया कि वह रूपवान था, बल्कि इसलिये कि वह सत्कर्मी था।

सेना, धन, ऐश्वर्य्य, एक भी सुकीर्तिके सिवाय तेरे काम न आयंगे।

तेरे आधिपत्यके स्थिर रहनेका बस एक ही मन्त्र है, कि किसी सबलका हाथ किसी निबलपर न उठने पाये।

मैं यह आशीर्वाद न दूंगा कि तू सहस्र वर्षों तक जीवित रहे क्योंकि मैं जानता हूं कि तू इसे अत्युक्ति समझेगा।

तुझे कीर्ति और यश लाभ करनेमें अधिक सामर्थ्य हो कि न्यायका पालन करे और अन्यायकी ताड़ना करे।

बारहवाँ अध्याय

आमोद प्रमोद

सादीकी कुल्लियातके सबसे अन्तिम भागमें जो ३० पृष्ठोंसे अधिक न होगा, आमोद प्रमोदकी कविताएं मिलती हैं जिनमें कुछ सुरुचिके पदसे इतनी गिर गयी हैं कि उन्हें अश्लील कहा जा सकता है। हमने इस पुस्तकके पहले संस्करणमें—पृष्ट ८७ पर यह लिखा था कि यह कवितायें सादीकी कदापि नहीं हो सकतीं, लेकिन इस विषयमें विशेष छान बीन करनेपर यह ज्ञात हुआ कि वास्तवमें सादी ही उनके कर्त्ता हैं। और यह सादीके प्रतिभारूपी चन्द्रपर ऐसा धब्बा है जो किसी तरह नहीं मिट सकता। जब विचार करते हैं कि शेख़ सादी कितने नीतिवान्, कितने सदाचारी, कितने

सद्गुणी महान् पुरुष थे तो इन अश्लील कविताओंको देखकर बड़ा खेद होता है। इस भागमें सादीने अपनी नीतिज्ञता और गाम्भीर्य्यको त्यागकर खूब गन्दी बातें लिखी हैं। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि सादी विनोदशील पुरुष थे और विनोदशीलता स्वभावका दूषण नहीं, वरन् गुण है, विशेष करके नीत्युपदेशमें वहां उसकी बड़ी आवश्यकता होती है, जहां उपदेशकका दुराचार और दुष्टताकी आलोचना करनी पड़ती है। यह गुण वहुधा उपदेशको रुचिकर बना दिया करता है, पर वही वात जब औचित्यसे आगे बढ़ जाती है तो अश्लील हो जाती है। देखना यह है कि शेख़ सादीने यह रचना विनोदार्थ की या किसी और कारणसे। यह वात उन कई पंक्तियोंसे स्पष्ट विदित हो जाती है जो उन्होंने इस भागके आदिमें क्षमा प्रार्थनाके भावसे लिखी हैं:—

"एक बादशाहज़ादेने मुझे बाध्य किया कि मैं कुछ अश्लील बातें लिखूं। जब मैंने इन्कार किया तो उसने मुझे मार डालनेकी धमकी दी। इसलिये विवश होकर मुझे यह कवितायें लिखनी पड़ीं और मैं इसके लिए परमात्मासे क्षमा मांगता हूं।"

इससे यह पूर्णतः सिद्ध हो जाता है कि सादीने यह कविताएं विवश होकर रचीं और वह उनके लिये लज्जित हैं। वह स्वयं इसे अनुचित समझते हैं। यद्यपि इससे सादीकी निर्भयतापर कुठाराघात होता है पर उस समयकी रुचि तथा सभ्यताको देखते हुए यही बहुत है कि सादीने इस रचनापर खेद तो प्रकट किया। उस समय कविगण बादशाहोंके आमोद प्रमोदके

निमित्त प्रायः गन्दी कविताएं लिखा करते थे। यह प्रथा ऐसी प्रचलित हो गयी थी कि बड़े बड़े विद्वानों और पण्डितोंको भी उनके लिखनेमें लेशमात्र संकोच न होता था। विद्वज्जन इन रचनाओंका आनन्द उठाते थे। रसिकगण उनकी सराहना करते थे। ऐसी दशामें सादीने भी यदि इन कविताओंकी रचनाको बहुत आपत्तिजनक न समझा हो तो आश्चर्यकी बात नहीं। उन्होंने लज्जा तथा खेद प्रकट किया, इसीपर संतोष करना चाहिए। इन कविताओंमें वह प्रफुल्लता और आनन्द-प्रदायिनी विनोदशीलता नहीं है जो उनका एक प्रधान गुण है। इससे विदित होता है कि शेखने अवश्य उनकी रचना दुराग्रहसे की, अपनी रुचिसे नहीं।